वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

फरवरी 01-15, 2026

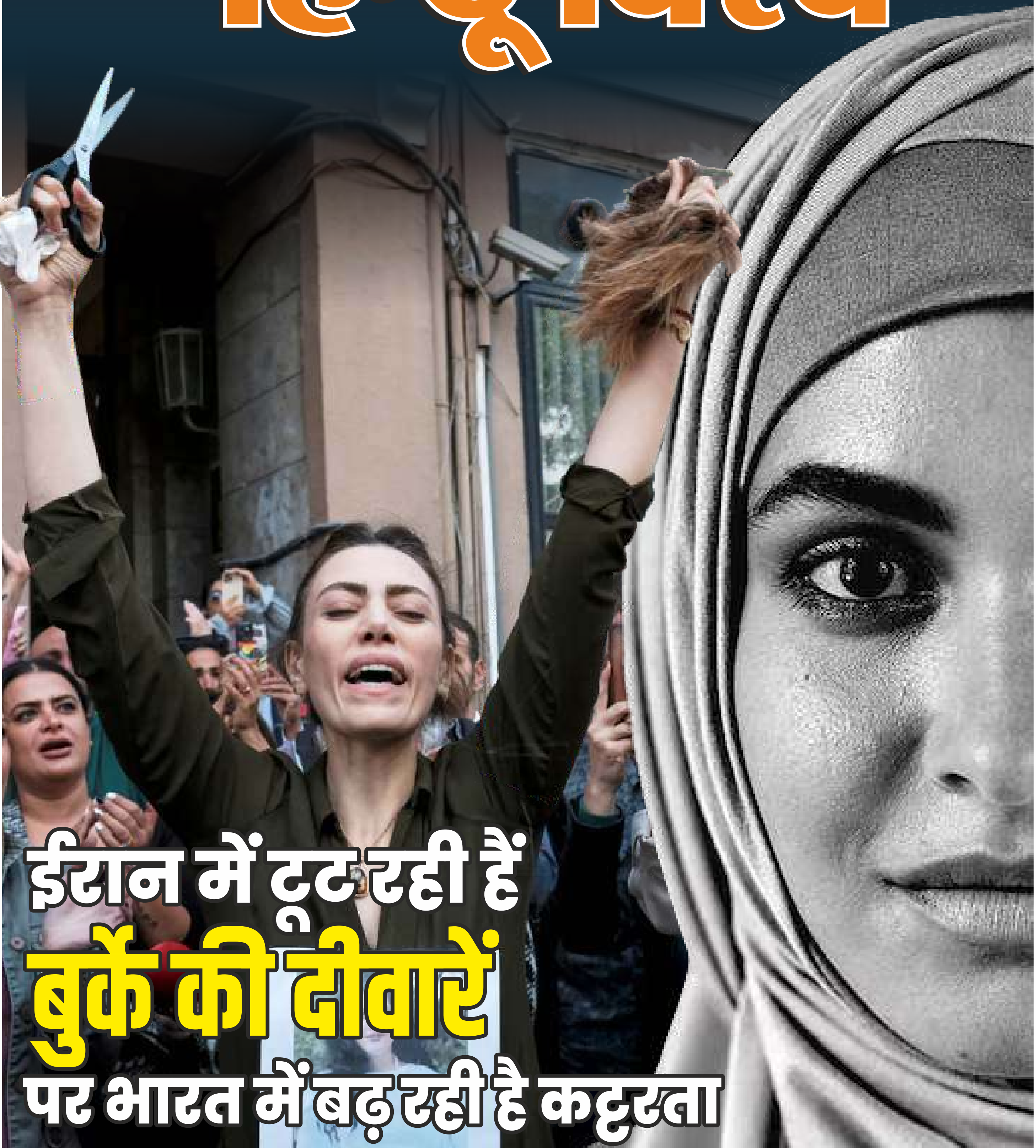

ईरान में टूट रही हैं बुर्के की दीवारें पर भारत में बढ़ रही है कट्टरता

हरिद्वार/ऋषिकेश में पूज्य संतों से भेंट वार्ता करते विहिप अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी, केन्द्रीय व प्रांतीय पदाधिकारी

भारतीय जनसेवा संस्थान-पश्चिम उड़ीसा प्रांत का अष्टम वार्षिकोत्सव

वात्सल्य वाटिका, हरिद्वार में सेवा विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय आचार्य अभ्यास वर्ग के शुभारंभ पर आचायाओं के साथ उपस्थित विहिप केन्द्रीय मंत्री श्री अजय पारीक जी

जयपुर में धर्म रक्षा कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री राजाराम जी

इस पक्ष में ....

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

आप लोगों के द्रुतगामी, मधुरतायुक्त, विद्रोह न करने वाले, स्वर्णिम पंखों वाले, उषाकाल में जागने वाले, दूर तक गमन करने वाले, पसीने की बूंदों को गिराने तथा हर्षित करने वाले अश्व आपको वहन करते हैं। जिस प्रकार मधुमक्खियाँ मधु की ओर गमन करती हैं, उसी प्रकार आप हमारे सवनों में आगमन करते हैं। – ऋग्वेद

01-15 फरवरी, 2026
माघी पूर्णिमा - फाल्गुन कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

05 खामनेई शासन के विरोध से कहीं अधिक है ईरान में युवाओं का आंदोलन

ईरानी बहनें तोड़ रही बुर्का की जंजीरें भारत में बढ़ रही है कट्टरता	07
सनातन की जीरो बजट अर्थव्यवस्था कैसी थी?	09
भारत विरोधि शक्तियों का षडयंत्र	12
पारिवारिक परंपरा को बोझ नहीं, वैश्विक समाधान समझें	15
वामपंथियों ने जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय की छवि खराब की है	17
हिन्दू सम्मेलन भारतीय समाज में दे रहे हैं समरसता के भाव को मजबूती	19
ग्रहों एवं राशियों से सम्बधित रोग	21
संतों के मार्गदर्शन में विश्व हिन्दू परिषद की भूमिका पर मंथन	22
समाज के अंतिम पंक्ति तक सेवा का संकल्प	23
मकर संक्रांति सामाजिक समरसता का पर्व	24
कुंभ क्षेत्र के गंगा घाट पर गैर हिंदुओं के प्रवेश पर विश्व हिन्दू परिषद उत्तराखण्ड का मत	25
वात्सल्य वाटिका में तीन दिवसीय आचार्य अभ्यास वर्ग का भव्य शुभारंभ	26

सुभाषित

किन्नु मे स्यादिदं कृत्वा, किन्नु मे स्यादकुर्वतः।
इति कर्माणि संचिन्त्य, कुर्याद् वा पुरुषो न वा।।

इस कार्य को करने से मेरा क्या लाभ होगा और न करने से मेरी क्या हानि होगी। इस प्रकार कर्मों के विषय में भली-भांति विचार करने के अनंतर ही किसी कार्य के सम्पादन अथवा असंपादन का निर्णय लेना चाहिए।

ईरान में टूटती बुर्के की दीवारें और भारत में बढ़ती मज़हबी कट्टरता

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

ईरान की सड़कों पर आज जो घटित हो रहा है, वह केवल एक इस्लामी राष्ट्र की आंतरिक हलचल नहीं, बल्कि मज़हबी कट्टरता के विरुद्ध मानव गरिमा का ऐतिहासिक संघर्ष है। जिस बुर्के और हिजाब को दशकों तक "अल्ला का आदेश" बताकर महिलाओं पर थोपा गया, वही आज उनके लिए दासता की सबसे मजबूत जंजीर बन चुका है। 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद ईरान में मज़हब को सत्ता का औजार बनाया गया और स्त्री को उसकी पहली बलि। महसा अमीनी की मृत्यु के बाद जिस प्रकार हज़ारों युवतियाँ अपने सिर से बुर्का उतारकर सड़कों पर उतरीं, उसने यह सिद्ध कर दिया कि भय से थोपी गई धार्मिकता अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकती।

यह दृश्य भारत के मुसलमानों के लिए आत्ममंथन का विषय है। क्योंकि जिस समय ईरान की महिलाएँ मज़हबी बंधनों को तोड़ने के लिए अपने प्राण तक जोखिम में डाल रही हैं, उसी समय भारत में कुछ वर्गों द्वारा कट्टर मज़हबी पहचान को और कठोर रूप दिया जा रहा है। परिधान, भोजन, शिक्षा और सामाजिक व्यवहार तक को मज़हब की संकीर्ण परिभाषा में बांधने का प्रयास हो रहा है। यह प्रवृत्ति न केवल सामाजिक समरसता के लिए घातक है, बल्कि राष्ट्र की वैचारिक आत्मा पर भी आघात है।

हिंदू सभ्यता का मूल स्वभाव इससे ठीक उलट रहा है। सनातन परंपरा में धर्म का अर्थ पंथ नहीं, बल्कि जीवन को धारण करने वाली मर्यादा है। यहाँ नारी को कभी परदे में कैद वस्तु नहीं माना गया, बल्कि शक्ति का साक्षात् स्वरूप स्वीकार किया गया। गार्गी और मैत्रेयी से लेकर अहिल्याबाई और रानी दुर्गावती तक, भारतीय इतिहास साक्षी है कि नारी नेतृत्व, ज्ञान और पराक्रम का केंद्र रही है। देवी की पूजा करने वाली इस भूमि में यदि स्त्री की स्वतंत्रता को मज़हबी भय से सीमित करने की मानसिकता पनपती है, तो यह केवल किसी एक समुदाय की समस्या नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए चेतावनी है।

कट्टरता का सबसे खतरनाक रूप तब सामने आता है, जब मुस्लिम महिलायें "अल्ला की इच्छा" का मुखौटा पहन लेती हैं। ईरान में यही हुआ। नैतिकता के नाम पर "मोरल पुलिस" बनाई गई, जिसने स्त्रियों की चाल, पहनावे और जीवन तक को अपराध की श्रेणी में ला खड़ा किया। परिणाम यह हुआ कि शिक्षा, रचनात्मकता और मानवीय संवेदना का गला घुंट गया। आज वही समाज अपनी भूल की कीमत रक्त और आँसुओं से चुका रहा है।

भारत में भी यदि मज़हबी राजनीति इसी प्रकार समाज को संचालित करने लगी, तो उसका अंत भिन्न नहीं होगा। आज विवाद कपड़ों पर है, कल विद्यालयों पर है, फिर रोजगार, विवाह और नागरिक अधिकारों पर। कट्टरता कभी वहीं नहीं रुकती जहाँ वह शुरू होती है; वह धीरे–धीरे पूरी सामाजिक चेतना को जकड़ लेती है। इतिहास बताता है कि जहाँ–जहाँ मजहबी संकीर्णता ने शासन का स्वरूप लिया, वहाँ सभ्यता पतन की ओर गई। आज ईरानी महिलाओं का संघर्ष भारत में हमें यह भी सिखाता है कि स्वतंत्रता कोई पश्चिमी विचार नहीं, बल्कि मानव आत्मा की स्वाभाविक आवश्यकता है। हिंदू दर्शन तो सहस्राब्दियों से कहता आया है–"आत्मवत् सर्वभूतेषु", अर्थात् दूसरों में स्वयं को देखो। जहाँ यह भाव जीवित रहता है, वहाँ कट्टरता टिक नहीं सकती।

भारत के मुसलमानों को यह तय करना होगा कि वह किस दिशा में जाएगा–ईरान जैसी मज़हबी कठोरता की ओर, या भारत की सनातन उदारता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास की ओर। यदि हमने अपनी सभ्यता की मूल चेतना को त्याग दिया और तुष्टिकरण या भय के कारण कट्टरता को बढ़ने दिया, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें क्षमा नहीं करेंगी।

ईरान में टूटती बुर्के की दीवारें केवल कपड़े के एक टुकड़े का अंत नहीं हैं, वे उस सोच के पतन का संकेत हैं, जो स्त्री को ईश्वर से नहीं, पुरुष और सत्ता से जोड़कर देखती है। भारत के लिए यह क्षण चेतावनी का भी है और अवसर का भी–चेतावनी इस बात की कि मज़हबी उग्रता किसी को नहीं छोड़ती और अवसर इस बात का कि वह विश्व को दिखा सके कि एक प्राचीन हिंदू राष्ट्र आधुनिकता और परंपरा, स्वतंत्रता और संस्कृति के बीच संतुलन कैसे स्थापित करता है।

इतिहास बताता है कि जहाँ–जहाँ मजहबी संकीर्णता ने शासन का स्वरूप लिया, वहाँ सभ्यता पतन की ओर गई। आज ईरानी महिलाओं का संघर्ष भारत में हमें यह भी सिखाता है कि स्वतंत्रता कोई पश्चिमी विचार नहीं, बल्कि मानव आत्मा की स्वाभाविक आवश्यकता है। हिंदू दर्शन तो सहस्राब्दियों से कहता आया है–''आत्मवत् सर्वभूतेषु'', अर्थात् दूसरों में स्वयं को देखो। जहाँ यह भाव जीवित रहता है, वहाँ कट्टरता टिक नहीं सकती।

खामनेई शासन के विरोध से कहीं अधिक है ईरान में युवाओं का आंदोलन

रवि पराशर

ईरान में बिगड़ती अंदरूनी परिस्थितियों के बीच भारतीयों की देश वापसी की प्रक्रिया शुरू हो गई। इस बीच सऊदी अरब, ओमान और कतर की सक्रियता के कारण इधर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सीधी आक्रामकता में कुछ नरमी आती दिखी है। हालांकि यह भी स्पष्ट है कि ईरान के विध्वंसक प्रदर्शनकारियों के प्रति उनकी सहानुभूति परोक्ष तौर पर और घनी हो गई होगी। ईरान को ले कर अमेरिका लंबे समय से आक्रामक रहा है। लेकिन अब वहाँ खामनेई शासन को हटाने की जिद पर अड़ी नौजवान पीढ़ी के सड़कों पर उत्पात मचाने के दौर में अमेरिका के मुँह में मिसरी घुल गई है।

ईरान में जो कुछ हो रहा है, उसे देखते हुए कुछ बड़े प्रश्नों का मन में तैरना स्वाभाविक है। पहला बड़ा प्रश्न तो यही है कि खाड़ी के चंद मुस्लिम देशों को छोड़ दें, तो शेष भारी–भरकम मुस्लिम वर्ल्ड की ओर से ईरान के समर्थन में आने की बहुत धीमी सी भी आहट अभी तक सुनाई क्यों नहीं दी है?

सिर्फ भारतीय संदर्भों में दूसरा प्रश्न यह है कि गाजा पर इजराइली हमले के विरोध में बुलंद आवाज में बजने वाले बहुत से बाजे ईरान में उबाल को ले कर बिल्कुल शांत क्यों हैं? इनमें तुष्टीकरण की राजनीति करने वाली पार्टियों के साथ ही कथित लेफ्ट लिबरल और मानवाधिकारों पर एकतरफा और सिलेक्टिव मुखर राय रखने वाले नेता–अभिनेता–बुद्धिजीवी भी शामिल हैं। प्रदर्शनकारियों के समर्थन या उन के माथे और सीने पर गोलियाँ दागे जाने के विरोध में उनके मुँह से एक शब्द भी क्यों नहीं निकल पा रहा है? ध्यान देने वाली बात यह है कि बाँग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे बर्बर अत्याचारों के विरोध में भी उनके होंठ पूरी तरह सिले हुए हैं।

फिर बड़ा प्रश्न यह भी है कि ईरानी मुस्लिम समुदाय की युवा पीढ़ी खामनेई शासन के अंत की मांग करते हुए जो कुछ भी कर रही है, क्या वह अंतिम तौर पर सही है? साथ ही प्रश्न यह भी है कि क्या ईरान के हालात का सीधा प्रभाव दूसरे कट्टरपंथी मुस्लिम देशों की युवा पीढ़ी पर भी पड़ सकता है? कहीं यही कारण तो नहीं है, जिसकी वहज से मुस्लिम ब्रदरहुड ईरान के खामनेई शासन के समर्थन में खुल कर खड़ा नहीं हो पा रहा है? एक और बड़ा अंतर्विरोध मुस्लिम समाज में साफ दिख रहा है कि ईरान में शिया मुसलमानों का वर्चस्व के कारण कहीं ऐसा तो नहीं है कि बाकी 72 फिरके उससे कन्नी काटे हुए हैं?

फिर, यह भी ध्यान देने वाली बात है कि ईरान के हश्र को देखते हुए क्या अब कट्टर मुस्लिम वर्ल्ड सऊदी अरब की तरह खुलेपन की ओर चहलकदमी करने की बात कम से कम सोचना शुरू करेगा? ईरानी क्रांति ने यह प्रश्न भी खड़ा कर दिया है कि कट्टरपंथी शासन व्यवस्था के अत्याचारों के आगे डट कर खड़े मुस्लिम युवा क्या अंतिम तौर पर वैसे ही आम इंसान हैं, जैसे किसी भी देश के हर धर्म के आम नागरिक?

ध्यान देने लायक बड़ा सवाल है कि ईरान में युवा पीढ़ी यदि सिर्फ खामनेई शासन का अंत देखना चाहती है, तो फिर वह मस्जिदों को क्यों जला रही है? ईरानी युवा महिलाएँ अपने हिजाब और बुर्के विरोध की आग में लपटों के हवाले क्यों कर रही हैं? इस तरह की घटनाएँ उन तर्कों की धज्जियाँ उड़ रही हैं कि ईरान के युवा महंगाई से त्रस्त हो कर खामनेई शासन से आग–बबूला हुए हैं।

मस्जिदों को जलाने या फिर हिजाब को आग के हवाले करने का

सीधा सा स्वाभाविक अर्थ तो यही निकलता है कि वहाँ की युवा पीढ़ी का गुस्सा मस्जिदों की मनमानी के विरोध में चरम बिंदु पर पहुँच गया है। इसी तरह मुस्लिम महिलाएँ उनके लिए बनाई गई दमघोंटू जानलेवा चारदीवारी से बाहर निकल कर बाहर की साफ और स्वतंत्र हवा में सांस लेना चाहती हैं। इस तरह ईरान में जो हो रहा है, वह खामनेई शासन का विरोध भर नहीं है, बल्कि धार्मिक संकीर्णता के प्रदूषण को समाप्त करने की जीवन से भरी मानवीय लालसा है, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

ईरान की युवा पीढ़ी यदि इस्लाम की इबादतगाहों यानी मस्जिदों को फूंक रही है, तो स्पष्ट है कि वहाँ के मुल्ले–मौलवी हद से आगे जा कर मानवाधिकारों का दमन कर रहे होंगे। भौतिक विज्ञान का सार्वभौमिक नियम है कि क्रिया के उलट उतनी ही मात्रा में प्रतिक्रिया भी होती है। किसी देश की पूरी की पूरी युवा शक्ति यदि विरोध के लिए सड़कों पर निकल आए, तो यह सोचने वाली बात होनी चाहिए कि उन पर जुल्म किस हद तक बढ़ गए होंगे? आज हो रही प्रतिक्रिया किसी एक या दो घटनाओं से प्रेरित नहीं है, बल्कि बहुत लंबे अर्से से चली आ रही दमनकारी अव्यवस्था के कारण है।

हजारों युवाओं के माथे और सीने पर गोली मारे जाने के बाद भी अगर युवा पीढ़ी सड़कों पर एकजुट है, तो इसका तो सीधा सा अर्थ यही है कि खामनेई शासन ने न सिर्फ जीवन के लिए उपयोगी भौतिक सामग्री तक पहुँच बेहद जटिल कर दी, साथ ही ऐसा वातावरण बना दिया है, जो मानसिक

शांति की एक–एक बूंद सुखा देता है। फिर अमेरिका के आग में घी डालने के काम ने विरोध की लपटों को ज्यादा ऊँचाई दे दी है।

इस टिप्पणी का समापन प्रश्न से ही करते हैं। ईरान में युवाओं के आंदोलन का फलित क्या होगा? हो सकता है कि खामनेई शासन का अंत हो जाए या फिर यह भी हो सकता है कि हजारों युवाओं की हत्या के बाद कट्टरपंथ का कठोर दमनचक्र आखिरकार हताश युवाओं को सड़कों से खाली हाथ ही घरों में जाने को विवश कर दे। अपने कूटनीतिक उद्देश्यों के कारण हो सकता है कि अमेरिका ईरानी सैन्य ठिकानों पर हमले कर दे, या फिर आंदोलनरत युवाओं को यह कटु अनुभव हो जाए कि अमेरिका के दिखाने वाले दांत भी हैं। यदि आखिरकार कट्टरपंथी विचारधारा ही बाजी मारती है, तो ऐसा तो अवश्य ही होगा कि ईरान के युवाओं के उफनते क्रोध का प्रेशर वॉल्व फिर से फटेगा। कब? पता नहीं।

चलते–चलते आपको बता दें कि पारंपरिक रूप से भारत और ईरान के कूटनीतिक रिश्ते अच्छे ही रहे हैं। वहाँ के सर्वोच्च नेता अली खामनेई का भारत से सीधा संबंध तो नहीं हैं, लेकिन उनके गुरु ईरान के संस्थापक नेता अयातुल्ला रूहोल्लाह खुमैनी थे और खुमैनी के बाबा सैयद अहमद मुसावी 'हिंदी' उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के किंतूर गाँव के निवासी थे। उनका उपनाम हिंदी भारत से उनका लगाव ही दिखाता है। साल 1834 में वे ईरान चले गए थे। वर्ष 1939 में उन्होंने ईरान के खोमैन शहर में घर ख़रीदा। वहीं खामनेई के गुरु अयातुल्ला खुमैनी का जन्म 1856 में हुआ। इस तरह खामनेई का परोक्ष संबंध भारत से जुड़ जाता है।

उत्तर बंग प्रांत में २५ दिसम्बर को तुलसी पूजन कार्यक्रम आयोजित

उत्तर बंग के ईश्वरपुर, मालदा, अलीपुरद्वार चाय बगानों, फरक्का, बहरामपुर, कृष्णानगर, नवद्वीप, धुबलिया, खरमाडांग में तुलसी पूजा के कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे हैं। विहिप सामाजिक समरसता अभियान पिछले 7 सालों से 25 दिसंबर को तुलसी पूजा और प्रचार दिवस मना रहा है। शाम को तुलसी के प्याले पर दीपक जलाए जाते हैं। साथ ही गीता पाठ, यज्ञ और भोज भी हो रहे हैं। तुलसी के पौधे, गीता और तुलसी के औषधीय गुणों के साथ समरसता का संदेश देनेवाले पम्पलेट बड़े पैमाने पर बांटे गए।

क्रिसमस के झूठे प्रचार को समझते हुए हिंदू समुदाय बड़े पैमाने पर इस पवित्र कार्य में शामिल हुआ। सामाजिक समरसता अभियान की कोलकाता शाखा ने इसके लिए हिंदू समुदाय को बधाई दी। सभी से परिवारिक तुलसी पूजा को सोशल मीडिया में सांझा करने की अपील की।

gksvhp@gmail.com

ईरानी बहनें तोड़ रही बुर्का की जंजीरें भारत में बढ़ रही है कट्टरता

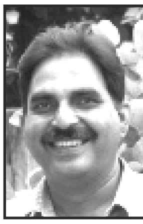

संजय सक्सेना, लखनऊ

ईरान में इस्लामिक शासन के खिलाफ मुस्लिम महिलाओं का साहसी विद्रोह पूरी दुनियाँ को सोचने पर मजबूर कर रहा है, जहाँ कुरान के नाम पर थोपी गई बुर्का और नकाब जैसी परंपराओं के खिलाफ सड़कों पर आवाज उठ रही है। खामेनेई की तानाशाही वाली सरकार के सामने ईरानी महिलाएँ बिना नारे लगाए, बिना हिंसा किए, बस सिर से दुपट्टा उतारकर सड़कों पर उतर आई हैं, जो महसा अमीनी की हिरासत में मौत के बाद 2022 से चला आ रहा आंदोलन अब 2025–2026 में और तेज हो गया है। यह बगावत न केवल ईरान तक सीमित है, बल्कि अरब और अन्य मुस्लिम देशों में भी बुर्का हटाने की हवा चल रही है, जबकि बाँग्लादेश, पाकिस्तान और भारत जैसे स्थानों पर इसके पक्ष में कट्टरता बढ़ रही है। यह और बात है कि इन देशों के मुसलमानों को अरब जगत मुस्लिम मानने को ही नहीं तैयार होता है।

ध्यातव्य है कि ईरान को पूरी तरह इस्लामिक राष्ट्र कहा जाता है, जहाँ 1979 की क्रांति के बाद अयातुल्लाह खुमैनी ने कुरान आधारित शासन स्थापित किया और महिलाओं पर सख्त हिजाब अनिवार्य कर दिया। नैतिक पुलिस द्वारा सड़कों पर गश्त कर महिलाओं को पकड़ना और सजा देना आम हो गया, लेकिन 2022 में 22 वर्षीय महसा अमीनी की हिरासत में संदिग्ध मौत ने चिंगारी जला दी। उसके बाद लाखों महिलाओं ने सड़कों पर उतरकर दुपट्टा जलाया, बाल कटवाए और नारे लगाए, जिससे पूरे देश में आंदोलन फैल गया। हालिया समाचारों के अनुसार दिसंबर 2025 में तेहरान और अन्य शहरों में महिलाएँ खुलेआम बिना दुपट्टे के घूम रही हैं, जो सरकार को डरा रहा है। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने विवादास्पद हिजाब कानून को स्थगित कर दिया, लेकिन सर्वोच्च नेता खामेनेई के दबाव में सैन्य बल तैनात हैं। प्रदर्शनों में कम से कम पाँच हजार मौतें हो चुकी हैं और हजारों गिरफ्तारियाँ हुई हैं, फिर भी महिलाओं का खामोश विरोध जारी है।

बहरहाल, यह आंदोलन सिर्फ ईरान का नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर इस्लाम के नाम पर थोपी गई कट्टरता के खिलाफ जागृति का प्रतीक है। अरब प्रायद्वीप से इस्लाम फैला, लेकिन अब सऊदी अरब जैसे देशों में महिलाओं को पहले से अधिक स्वतंत्रता मिल रही है, जहाँ अब पूर्ण बुर्का अनिवार्य नहीं। मध्य एशिया के मुस्लिम बहुल देशों में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। कजाकिस्तान, जहाँ 70 प्रतिशत आबादी मुस्लिम है, ने 2025 में सार्वजनिक स्थानों पर बुर्का–नकाब पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया, जुर्माना 10 हजार से एक लाख रुपये तक। ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान ने पहले ही चेहरा ढ़ंकने वाले कपड़ों पर रोक लगा रखी है, ताकि धार्मिक कट्टरपंथ न फैले। कुल 16 से अधिक देशों ने बुर्का या नकाब पर कानूनी पाबंदी लगा दी है। यूरोपीय देशों में स्विट्जरलैंड ने 2021 के जनमत संग्रह में 51.21 प्रतिशत वोटों से 2025 में इसे लागू किया, जबकि फ्रांस, बेल्जियम, डेनमार्क, ऑस्ट्रिया, नीदरलैंड, बुल्गारिया, इटली और जर्मनी ने सार्वजनिक स्थानों पर चेहरा ढ़ंकने पर जुर्माना या जेल की सजा निर्धारित की। बेल्जियम में मात्र 300 महिलाएँ ही बुर्का पहनती थीं, फिर भी 10 लाख मुसलमानों के बीच इसे प्रतिबंधित किया गया।

इसके विपरीत दक्षिण एशिया में स्थिति उलटी है। बाँग्लादेश, पाकिस्तान और भारत में, जहाँ इस्लाम स्थानीय रूप से फैला, वहाँ कट्टरता बढ़ रही है। भारत के बिहार में हाल ही में नियुक्ति पत्र वितरण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा एक महिला डॉक्टर का दुपट्टा हटाने पर विवाद हुआ, जिसके बाद पाकिस्तान तक से विरोध के सुर उठे। बीजेपी नेता हरिभूषण ठाकुर ने कहा कि बुर्का पसंद है, तो पाकिस्तान या बाँग्लादेश चले जाएँ। पाकिस्तान और बाँग्लादेश में महिलाएँ दुपट्टा या बुर्का पहनने को धार्मिक अधिकार बताकर प्रदर्शन कर रही हैं, जबकि वहाँ के सर्वेक्षणों में 60–70 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ इसे स्वैच्छिक बताती हैं, लेकिन कट्टर समूह दबाव बनाते हैं। भारत में कर्नाटक हिजाब विवाद के बाद स्कूल–कॉलेजों में बहस चली, जहाँ मुस्लिम छात्राओं ने पहनने पर जोर दिया। यह विरोधाभास दर्शाता है कि

जहाँ मूल इस्लामिक केंद्रों में महिलाएँ आजादी चाह रही हैं, वहीं यहाँ आयातित कट्टरता बुर्का को मजबूरी बना रही है।

सऊदी अरब में भी महिलाएँ ड्राइविंग और बिना नकाब के घूमने की मांग कर रही हैं, लेकिन दक्षिण एशिया में तस्वीर उलट है। यहाँ बाँग्लादेश, पाकिस्तान और भारत में मुस्लिम महिलाएँ उसी हिजाब या बुर्का को धार्मिक फर्ज बताकर प्रदर्शन कर रही हैं। पाकिस्तान में हाल ही में लाहौर और कराची की सड़कों पर महिलाओं ने जुलूस निकाले। वे कह रही हैं कि स्कूलों में हिजाब पहनना उनका संवैधानिक अधिकार है। वहाँ के सर्वे बताते हैं कि साठ से सत्तर प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ इसे अपनी मर्जी से पहनती हैं, लेकिन कट्टर गुट दबाव बनाते हैं। पड़ोसियों की नजरें, मौलवियों के फतवे और सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग से कई लड़कियाँ मजबूर हो जाती हैं। बाँग्लादेश में ढाका विश्वविद्यालय के परिसरों में छात्राओं ने हिजाब अनिवार्य करने की मांग की। वहाँ भी तहरीक–ए–तालिबान जैसे संगठन पीछे हैं। महिलाएँ कहती हैं कि बिना हिजाब के पढ़ाई नहीं करेंगी, लेकिन गुप्त सर्वेक्षणों में पता चलता है कि आधी से ज्यादा लड़कियाँ इसे बोझ मानती हैं। फिर भी भीड़ का दबाव उन्हें चुप करा देता है।

भारत में कर्नाटक का हिजाब विवाद तो चरम पर पहुँच गया। उडुपी के कॉलेजों में मुस्लिम छात्राओं ने कक्षा में घुसने से इनकार कर दिया। वे दुपट्टा या हिजाब के बिना परीक्षा नहीं देंगे, ऐसा हंगामा किया। प्रदर्शनकारियों के पीछे जमीयत उलेमा–ए–हिंद जैसे संगठन थे। कोर्ट ने फैसला दिया कि यूनिफॉर्म का पालन जरूरी है, लेकिन बहस थम नहीं रही। मंड्या, बीदर जैसे जिलों में स्कूलों के बाहर जुलूस हुए। छात्राओं के माता–पिता भी सड़क पर उतरे। वे चिल्ला रहे थे–हमारी बेटियों का धर्म सुरक्षित रखो। लेकिन सच्चाई यह है कि ग्रामीण इलाकों में कई लड़कियाँ डर से हिजाब पहनती हैं। पड़ोस के हिंदू–मुस्लिम तनाव में इसे ढाल बना लिया जाता है।

उक्त देशों में यह प्रवृत्ति चिंताजनक है। जहाँ दुनियाँ महिलाओं को सशक्त बना रही है, वहाँ दक्षिण एशिया में कट्टरता उन्हें पुराने जंजीरों में जकड़ रही। सर्वे बताते हैं कि ज्यादातर महिलाएँ स्वतंत्रता चाहती हैं। लेकिन अल्पसँख्यक कट्टर गुट बहुमत को दबा रहे हैं। क्या यह धार्मिकता है या राजनीति ? नेताओं को चाहिए कि वे तथ्यों पर ध्यान दें। महिलाओं को चुनाव करने दें–पहनें या न पहनें। तब सच्ची तस्वीर सामने आएगी, अन्यथा यह आयातित आग स्थानीय सँस्कृति को भस्म कर देगी। दक्षिण एशिया की महिलाओं को मूल आजादी मिलनी चाहिए, न कि मजबूरी।

बात ईरान में आए बदलाव की की जाए, तो, इसके पीछे गहन कारण हैं। ईरान जैसे देशों में आर्थिक संकट, मुद्रास्फीति और बेरोजगारी ने महिलाओं को जागृत किया, जहाँ प्रदर्शनों में आजीविका की मांगें भी जुड़ गईं। मुस्लिम बहुल देशों में राष्ट्रीय सुरक्षा को बहाना बनाकर बुर्का प्रतिबंध बढ़ा, क्योंकि चेहरा ढंका होना अपराध को आसान बनाता है। वैश्विक स्तर पर 16 देशों के प्रतिबंध से संदेश साफ है कि बुर्का महिलाओं के उत्पीड़न का प्रतीक माना जा रहा। दक्षिण एशिया में कट्टरता का कारण विदेशी धन–सहायता और राजनीतिक उन्माद है, जहाँ बाँग्लादेश–पाकिस्तान में मदरसों से प्रेरित युवतियाँ बुर्का को पहचान बना रही हैं। ईरानी महिलाओं की बगावत ने दुनियाँ को दिखाया कि इस्लाम के नाम पर थोपी गई परंपराएँ टूट रही हैं। यदि यह लहर फैली, तो कट्टरता वाले क्षेत्रों में भी परिवर्तन अपरिहार्य होगा। आंकड़ों से सिद्ध है कि जहाँ प्रतिबंध लगे, वहाँ महिलाओं की भागीदारी 20–30 प्रतिशत बढ़ी है। यह संघर्ष स्वतंत्रता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय जनसेवा संस्थान पश्चिम उड़ीसा प्रांत का अष्टम वार्षिकोत्सव

गत 23 दिसम्बर 2025, मंगलवार, उड़ीसा पश्चिम प्रांत के भारतीय जनसेवा संस्थान का अष्टम वार्षिकोत्सव झारसुगुड़ा शहर स्थित एम.सी.एल. ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुआ। संस्थान के द्वारा उड़ीसा प्रांत में संचालित 14 विद्यालय, 6 छात्रावास, 9 मंदिर, 3 सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, एक कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, 90 संस्कार शालाओं के समस्त बालक–बालिका, कार्यकर्ता, दानदाता एवं स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त महामंत्री कोटेश्वर जी शर्मा, अन्य प्रमुख अधिकारी श्री गौरी प्रसाद रथ, प्रांत अध्यक्ष डॉ. राजकुमार बडपंडा, स्थानीय विधायक श्री टंकधर जी त्रिपाठी, संस्थान के

अध्यक्ष श्री अशोक जी साकुनिया, श्री प्रभु केडिया मंच पर उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के पश्चात् विद्याथियों द्वारा साँस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया। कार्यक्रम में लगभग 600 श्रोता उपस्थित थे, क्षेत्र प्रमुख श्री अच्युतानंद जी कर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

jansewa@gmail.com

सनातन की जीरो बजट अर्थव्यवस्था कैसी थी?

भारत की ऋषि निर्मित सनातन अर्थव्यवस्था

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

भारत की सनातन अर्थनीति को समझने के लिए आपको अपनी बुद्धि की स्लेट पर लिखे हुए इकोनॉमी शब्द को मिटाना होगा। उसके बिना यह ऋषियों द्वारा निर्मित सनातन अर्थनीति किसी के समझ में नहीं आने वाली। इकोनॉमी के आईने में भारतीय अर्थनीति समझ में नहीं आती। विदेशी मापदंडों के आधार पर भारत की थाती को समझना असंभव है।

यदि आप चाणक्य के अर्थशास्त्र के आधार पर भी भारत की अर्थनीति व व्यवस्था को पूर्णतः समझ गए, ऐसा मान् लेंगे, तो यह भी एक अपूर्णता होगी। क्योंकि चाणक्य का वह अर्थशास्त्र तत्कालीन राजकीय आवश्यकताओं के अनुरूप, राजकीय अर्थशास्त्र के विषय प्रतिपादन का उपक्रम मात्र है। यद्यपी चाणक्य के शोध प्रबन्ध में भारत के तत्कालीन समाज की सामाजिक अर्थव्यवस्था की झलकियाँ अवश्य दृष्टीगोचर होती हैं। हमारे पुण्यभूमि भारत में राजकीय व्यवस्था, राष्ट्र की व्यवस्था का एक पहलू मात्र रहा है, सम्पूर्ण अर्थशास्त्र नहीं था वह।

यूरोप के सिटी स्टेट्स की भाँति हमारा समाज कभी भी सत्ता का पिछलग्गू नहीं रहा। हमने सत्ताभिमुख सत्तामुखापेक्षा का स्वभाव कभी पाला नहीं। सत्ता आधारित जीवनशैली कभी अपनाया नहीं। सत्ता के भरोसे ही बैठे रहने की आदत कभी पाला नहीं। यही हमारी सँस्कृति की अमरता का मूल मंत्र है। जो समाज सत्ता का पिछलग्गू बनकर जीवन जीने को अभिशप्त हो जाता है, वह कई बार उजड़ता है, कई बार बसता है। उस राष्ट्र के जीवन में जीवन व मृत्यु के खेल का सातत्य चल भी सकता है और यह चक्र भंग भी हो सकता है। अर्थात् वह राष्ट्र काल कवलित भी हो सकता है।

राष्ट्रों के जीवन में भी मृत्यु और पुनर्जन्म होता है, यदि राष्ट्र की संकल्पना के अधिष्ठान दृढ़ हों। अन्यथा तत्कालीन स्वार्थों के खंभों पर निर्मित राष्ट्र की जीवनी शक्ति इतनी क्षीण होती है कि वे दुबारा गर्भ में आने के पूर्व ही उर्ध्वपातन का शिकार हो जाते हैं। सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं। वह राष्ट्र अजर–अमर होता है, अनश्वर होता है, जो अपने सनातन जीवन मूल्यों के आधार पर, स्वयं के तप–त्याग के उत्स के अन्तरबल के आधार पर, अपने स्वयं का स्वयं ही निर्माण करता है। स्वयंभू मनु की परिभाषा यही है। ऐसे ही मनु से मनुष्य की व्युत्पत्ति हुई है। पूर्ण से पूर्ण रूप में निकलकर, पूर्ण होकर, पूर्ण रूप में विराजमान होता है, जीवन की पूर्ण रूप में पूर्णता ही जिसका ध्येय होता है, परम सत्ता से पूर्ण रूपेण आत्मसात हो जाने की कामना और साधना ही जिसका हेतु होता है। ऐसे धर्माधिष्ठित राष्ट्र को ही भारत कहा जाता है।

हमारे अपने यह बात कम समझते हैं, किन्तु हमारे शत्रु यह बात बहुत बढ़िया से समझते हैं, इसीलिये हमारे सनातन राष्ट्र के शत्रु इस व्यवस्था को ध्वस्त करने में नित्य निरंतर प्रयत्नशील हैं, क्योंकि उन्हें यह ज्ञात है कि भारत की नाभि का अमृत यही व्यवस्था है। वह व्यवस्था, जिसका संक्षिप्त विवरण मैं आगामी पंक्तियों में वर्णित करने वाला हूँ।

विदेशियों ने हमें ठीक से समझ लिया। वामियों ने हमें ठीक से समझ लिया। म्लेच्छ मजहबों ने हमें ठीक से समझ लिया। भारतद्रोहियों ने हमें भली प्रकार जान लिया।

किन्तु हे! आसेतु हिमाचल के आर्य पुत्रों! तुम कब समझोगे इस राष्ट्र की अमरता के रहस्य को? तुम कैसे समझोगे, भारत की अजस्र सँस्कृति की अनश्वरता को? तुम क्यों नहीं समझते, भारत के जन जीवन के अंतस में प्रभावित अमरत्व के इस प्राण प्रवाह को? तुम कितना कुछ गँवाकर समझोगे, भारत के समाज जीवन की ऋषि निर्मित सामाजिक–आर्थिक संरचना को? क्या तुम्हें भारत की धरा पर प्रवाहित पुण्यसलिला नदियों की धारा से यह संदेश नहीं सुनाई देता? क्या तुम्हें प्राण पोषक पवन के प्रवाह से यह संदेश नहीं मिलता? क्या भारत की माटी से नित्य प्रस्फुटित बीजांकुर तुम्हें यह संदेश नहीं देते? भारत के (मेरे) अंतस से निर्झरित इस आर्तनाद को कब सुनोगे ऋषिपुत्रों? (सामुदायिक संबोधन में संस्कृत व्याकरण की परंपरा के अनुरूप पृथक रुप से आर्यपुत्रियों/ऋषिपुत्रियों कहना आवश्यक नहीं है। एक ही संबोधन में सभी समाहित हैं।)

भारत का समाज जीवन शून्य बजट पर आधारित था। अर्थात् इस धर्मभूमि पर धर्मेनैव प्रजा सर्वं रक्षन्तिस्य परस्परम् के आधार पर सब कुछ स्व संचालित था। यहाँ धर्म के आधार पर हम सभी एक दूसरे की चिंता करते थे, रक्षा करते थे। सामान्य स्थिति में (कुछ विशेष परिस्थितियों को अपवाद रूप में छोड़कर) हमारी चिंता, व्यवस्था व रक्षा के लिए कभी किसी राजा की आवश्यकता न हुई। समाज स्वयं में ही सक्षम था, स्वावलंबी था। बीस कोस के घेरे का प्रत्येक क्षेत्र अपनी सारी आवश्यकताएँ (99.99 प्रतिशत) स्थानीय स्तर पर ही पूर्ण कर लेता था। यह बीस कोस के घेरे का क्षेत्र पूर्ण स्वावलंबी होता था। इस बीस कोस के घेरे के बाहर जीविका के लिए, विवाह के लिए, कार्य–व्यापार के लिए, किसी अन्य सरोकार के लिए जाने की कोई आवश्यकता नहीं थी, यद्यपी जाने पर कोई रोक न था। जाने को सम्पूर्ण विश्व

भारत का समाज जीवन शून्य बजट पर आधारित था। अर्थात् इस धर्मभूमि पर धर्मेनैव प्रजा सर्व रक्षन्तिस्य परस्परम् के आधार पर सब कुछ स्व संचालित था। यहाँ धर्म के आधार पर हम सभी एक दूसरे की चिंता करते थे, रक्षा करते थे। सामान्य स्थिति में (कुछ विशेष परिस्थितियों को अपवाद रूप में छोड़कर) हमारी चिंता, व्यवस्था व रक्षा के लिए कभी किसी राजा की आवश्यकता न हुई। समाज स्वयं में ही सक्षम था, स्वावलंबी था।

में हम जाते थे। आपने भी सुना होगा– मथुरा की बेटी, गोकुल की गाय। करम फूटे तो बाहर जाए।। यह केवल गोकुल और मथुरा की गाथा नहीं थी। यह सम्पूर्ण भारत के सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था की दिग्दर्शक लोकोक्ति है।

भारत में परस्पर सहयोग की ऐसी परम्परा विकसित की गयी थी कि किसी भी व्यक्ति या परिवार को स्वयं की आवश्यकताओं की चिंता करने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। सभी लोग एक दूसरे का ध्यान रखते थे। सभी एक दूसरे की आवश्यकताओं का ध्यान रखते थे और कुछ कमी ध्यान में आते ही अपने सामर्थ्य अनुरूप उसे पूर्ण करते थे। अभी कोरोना संक्रमण काल में हिन्दू समाज का यह सेवा भाव चतुर्दिक दृष्टिगोचर हो रहा है। इसे सेवा विनिमय या वस्तु विनिमय का नाम देकर इस व्यवस्था को बार्टर सिस्टम से एक्वेट करना न केवल अव्वल दर्जे की मूर्खता है, वरण यह भारत के प्रति किया हुआ बौद्धिक अपराध भी है। कुत्सित मानस के लोगों ने इसे बार्टर सिस्टम की संज्ञा देने का प्रयत्न किया। बार्टर सिस्टम में दो बातें हैं। एक तो लेनदेन और दूसरा बराबरी का लेनदेन। यह एक आर्थिक व्यापार का प्रकार है।

किंतु हमारे परस्पर सहयोग की परम्परा विनिमय आधारित नहीं है, यह लेनदेन नहीं है, इसमें बराबरी के लेनदेन का भी कोई मामला नहीं है। यह तो जहाँ कम वहाँ हम वाली बात है। आज भी भारत के गाँवों में जब किसी किसान के घर कोई नवीन फसल आती है, तो पहले वह गाँव के सभी घरों में बाँटता है, उसके उपरान्त ही स्वयं ग्रहण करता है। जैसे मक्का, शकरकंद, मूंगफली, गन्ना, फल, सब्जी इत्यादि का वितरण तो आज भी गाँवों में यथावत प्रचलित है। किसी

की बेटी अपने ससुराल से पिता के घर आती है, तो उसके ससुराल से भेजा गया पकवान और मिष्ठान्न पूरे गाँव में बाँटा जाता है। बहु अपने पीहर से आती है तो उसके नैहर/पीहर का पकवान और मिष्ठान्न पूरे गाँव में वितरण होता है, फिर परिवार के लोग ग्रहण करते हैं। बेटी के विवाह के समय पूरे गाँव के लोग मिलकर दहेज देते हैं। दहेज की थाली में सबका योगदान आता है। तीर्थयात्रा से लौटने पर पूरे गाँव को प्रसाद खिलाकर ही स्वयं ग्रहण करने की रीति है। विवाह इत्यादि अनेक पुण्य अवसरों पर पूरे गाँव को खिलाकर ही स्वयं खाने का चलन है। केक काटकर पहले स्वयं खाना और बाद में अपना जूठन सबको खिलाना, यह भारत की रीति नहीं है।

आज भी बिहार और पूर्वी उत्तरप्रदेश के लोग स्वयं के लिए "मैं" संबोधन नहीं करते, "हम" शब्द से स्वयं को संबोधित करते हैं। जब व्यक्ति का "मैं भाव", "अहम भाव", "हम" में बदल जाता है, समष्टिरूप में जीवन चिंतन ढल जाता है, तो किसने कम दिया और किसने अधिक दिया, यह माप–तौल का आभास ही समाप्त हो जाता है। हमने सियाराममय सब जग जानी के भाव से ही एक दूसरे का आदर किया है। सहयोग, सहकार व सेवा किया है। परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमाई।। की भावना से ही हमने सृष्टि का आदर किया है। कण कण में भगवान है, यह हम जानते थे। और नर की सेवा ही नारायण सेवा है, यह भी हम जानते थे। जो धन परोपकार के बाद बचे, वही सुखदायी है, वही सद्गति देने वाला है, यह भी हम जानते थे। किन्तु दान किसके लिए कितना करना आवश्यक है, यह भी हम जानते थे। यह समझने के लिए द्वारकाधीश के द्वारा मित्र सुदामा का चावल खाते समय रुक्मिणी द्वारा हाथ पकड़ लिए जाने के प्रसंग से समझा जा सकता है। किंतु यह सीमा कृपणता का संकेत नहीं है, यह भी ध्यान रहे। हमने सेवा, प्रेम व उपकार के बदले में अधिक से अधिक देने का प्रयत्न किया है। इन विषयों में माप–तौल करने को नीचता की संज्ञा हमने दिया था।

हमने कभी किसी के योगदान व अवदान की कीमत नहीं लगाया। बाजार मूल्य पर कुछ सोचने की आदत नहीं डाला। हमने ऋण चुकाने की पृथक प्रकार की परिपाटी का निर्माण किया। देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण की व्याख्या से भारत की अर्थव्यवस्था की गहराईयों को समझने में सहायता प्राप्त होगी। बिदुर के साग की कीमत, विदुरानी के केले के छिलके की कीमत क्या कभी किसी कृष्ण ने लगाया था, इस भारत में? द्रौपदी के दो अंगुल की साड़ी के टुकड़े की कीमत क्या कभी श्रीकृष्ण ने लगाया था? छोटे से वस्त्र के टुकड़े को कृष्ण ने कपड़ों के ढेर के रूप में लौटाया था, जिसको खींचते–खींचते दुशासन की भुजाएँ शिथिल हो गई थी। चावल का एक दाना खाकर श्रीकृष्ण ने ऋषियों के पेट भर दिया था, क्या कभी उसकी कीमत का आकलन किया जा सकता है? सबरी के जूठे बेर की कीमत क्या कभी श्रीराम ने लगाया था? दुर्वासा की बहती हुई लंगोट जल से निकालकर, धोकर ऋषिवर को स्नानगृह में दे देने वाली कुंती को कितना उपकार वापस दिया दुर्वासा ने? क्या कभी किसी ने इसकी कीमत बाजार मूल्य पर लगाया था भारत में? शिवि की छाती का माँस, पँछी के मांस के मोल की तुलना कभी किसी ने किया था भारत में? दधीचि की हड्डियों का मोल क्या कभी किसी इंद्र ने चुकाया था?

अतः मित्रों विदेशी मापदंडों पर भारत को समझने की भूल न करना। आगामी अंकों में बताऊँगा की भारत की अर्थव्यवस्था कैसे खड़ी हुई थी? उसके पायदान कैसे थे? कितने मजबूत थे, जो आजतक के आघातों के पश्चात् भी नहीं हिले।

धर्मरक्षा दिवस

गुरुद्वारा श्री गुरु कलगीधर साहिब जवाहरनगर जयपुर में विश्व हिंदू परिषद धर्मप्रसार द्वारा गुरुद्वारा प्रधान सरदार राजन के सान्निध्य एवं सचिव गुरुवेंद्र सिंह रिम्पी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में गुरु गोविंद सिंह जी के साहिबजादों को पुष्पांजलि अर्पित कर धर्मरक्षा दिवस मनाया गया।

प्रांत धर्मप्रसार प्रमुख सी.एम. भार्गव ने धर्म की रक्षा के लिए गुरु तेगबहादुर, भाई मतिदास, भाई सतिदास, भाई दयाला, गुरु गोविंद सिंह जी के चारों पुत्रों एवं बंदा बैरागी के बलिदान के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में सेवादार कमलजीत सिंह, मिंटू सिंह, ऋषि गालव, जिला धर्मप्रसार प्रमुख निखिल बसवाल, सह प्रमुख महेश कुमार, बिरादरी प्रमुख राजेश जी, धर्मरक्षक विष्णु साहू सहित अनेक कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

भारत विरोधि शक्तियों का षड्यंत्र

हिंदुओं और भारत के खिलाफ पश्चिमी लोगों का ब्रेनवॉश करने वाले वामपंथी इस्लामी और डीप स्टेट तत्वों पर विश्लेषण

श्रीराम कृष्णन को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर व्हाइट हाउस का सीनियर पॉलिसी एडवाइजर नियुक्त किए जाने और विवेक रामास्वामी के 26 दिसंबर, 2024 को X पर पोस्ट करने के बाद, जब वे डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी (DOGE) के लीडर के तौर पर अपने छोटे से कार्यकाल में थे, तो प्लेटफॉर्म पर भारत विरोधी नफरत में काफी बढ़ोतरी देखी गई। जनवरी 2025 में, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ ऑर्गेनाइज्ड हेट ने X पर भारत विरोधी नस्लवाद पर एक रिपोर्ट जारी की। तब से इस बात का कोई खास संकेत नहीं मिला है कि X सहित सोशल मीडिया पर भारत विरोधी पूर्वाग्रह कम हुआ है। इस रिपोर्ट में X पर भारत विरोधी नस्लवाद के मौजूदा स्तर का विश्लेषण किया गया है। यह भारत विरोधी भावना में बढ़ोतरी का विश्लेषण करती है, भारत विरोधी नस्लवादी बातचीत में मुख्य विषयों और कहानियों को बताती है और उन पोस्ट और मुद्दों पर प्रकाश डालती है, जिनका उल्लेखनीय प्रभाव और पहुँच रही है।

X पर 680 ज्यादा एंगेजमेंट वाली भारत विरोधी नस्लवादी पोस्ट को 1 जुलाई से 7 सितंबर, 2025 के बीच 281.2 मिलियन व्यूज मिले। भारतीयों को 'हमलावर' और नौकरी चोर बताने वाली कहानियों के साथ–साथ भारतीयों को देश से निकालने की मांगों वाली 474 पोस्ट (69.7 प्रतिशत) और 111.8 मिलियन व्यूज़ मिले, जिससे इमिग्रेशन और निष्कासन से जुड़ी बातें एंगेजमेंट का मुख्य कारण बन गईं। H&1B असंतोष और नौकरी चोरी की बातें मुख्य समूह में प्रमुख थीं, जो ज़ेनोफ़ोबिया को आर्थिक असुरक्षा के साथ मिला रही थीं और भारतीयों पर वीज़ा प्रतिबंध, इनकार, निर्वासन और नागरिकता रद्द करने की मांगों को बढ़ा रही थीं।

पंकज जगन्नाथ जयसवाल

पूरे इतिहास में, हिंदुओं ने इस्लामी बर्बरों और ब्रिटिश औपनिवेशिक सेनाओं दोनों से पूर्वाग्रह, कट्टरता, भेदभाव और उत्पीड़न सहा है। जबकि कई प्रमुख प्राचीन धर्म और सभ्यताएँ खत्म हो गईं, हिंदू धर्म ने अपने 'सनातन' चरित्र के अनुसार, आक्रमणों, उपनिवेशों और अधीनता का सामना किया और फिर भी कायम रहा, इसके बावजूद कि समुदाय की समृद्ध सँस्कृति, इतिहास और मानवता की भलाई में योगदान के बावजूद, इसे लगातार उन लोगों द्वारा बदनाम किया गया है, जो इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते।

121 पोस्ट (17.8 प्रतिशत) में भारत विरोधी अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया और उन्हें 74.3 मिलियन व्यूज़ मिले।

12 अगस्त को फ्लोरिडा में एक सिख ड्राइवर से जुड़े ट्रक दुर्घटना से जुड़ी 74 पोस्ट (10.9 प्रतिशत) को 94.9 मिलियन व्यूज़ मिले, जिससे पता चलता है कि कैसे एक ही घटना का इस्तेमाल पूरे समुदायों को पेशे के आधार पर बलि का बकरा बनाकर बदनाम करने के लिए किया जाता है। अगस्त 2025 में गतिविधि चरम पर थी, जिसमें 381 पोस्ट और 189.9 मिलियन व्यूज़ थे। अमेरिका–भारत टैरिफ विवाद और घटना–आधारित गुस्सा कहानियों में बढ़ोतरी के साथ मेल खाता था, जो दर्शाता है कि नीतिगत तनाव और ब्रेकिंग न्यूज़ नस्लवादी सामग्री को बढ़ाने वाले अनुमानित कारक के रूप में काम करते हैं।

लगभग 65 प्रतिशत पोस्ट US पर केंद्रित थे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन के दौरान US ही भारत विरोधी डिजिटल नस्लवाद का केंद्र था।

हिंदुओं और भारत के प्रति इतनी नफ़रत क्यों?

असल में वे भारत से नफ़रत नहीं करते; बल्कि यह एक औपनिवेशिक मानसिकता और विकासशील देशों के प्रति पूर्वाग्रह है, जिससे विकसित देश नफ़रत करते हैं, क्योंकि यह उनके प्रभुत्व और भारत के अपनी पुरानी शान में लौटने के लिए खतरा पैदा करता है। पश्चिमी मीडिया और सत्ता संरचनाओं में कई लोगों के लिए भारत सिर्फ़ हिंसा, पूर्वाग्रह, गरीबी और सामाजिक अशांति का प्रतीक हो सकता है। इतना ही नहीं बल्कि औपनिवेशिक सोच वाले भारतीय बुद्धिजीवी भी ऐसे ही हैं।

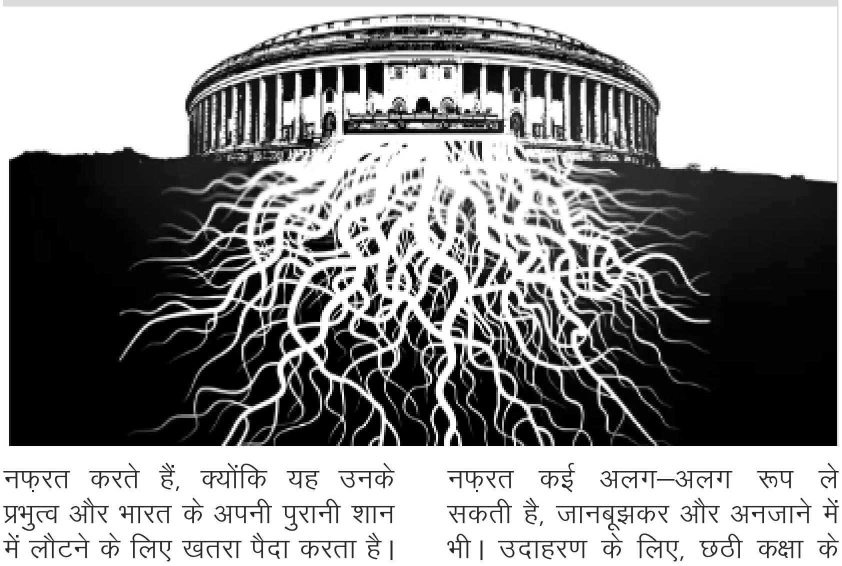

हिंदूफोबिया और हिंदू विरोधी नफ़रत कई अलग–अलग रूप ले सकती है, जानबूझकर और अनजाने में भी। उदाहरण के लिए, छठी कक्षा के छात्र को मूर्ति पूजक कहा जा सकता है और उसे अपनी क्लास से अलग–थलग महसूस कराया जा सकता है; एक दक्षिण एशियाई प्रोफेसर एक कॉलेज छात्र को हिंदू विरासत का छात्र होने के लिए निशाना बना सकता है और उसे शर्मिंदा कर सकता है; एक चुने हुए अधिकारी पर

अमेरिका–भारत संबंधों पर उसकी स्थिति के कारण दोहरी वफ़ादारी का आरोप लगाया जा सकता है और उसके साथ दोहरा मापदंड अपनाया जा सकता है, या एक हिंदू अमेरिकी को उसी कारण से नाज़ी समर्थक कहा जा सकता है।

यह कोई आलोचना नहीं है। सैन्य स्टील्थ हथियारों की तरह, यह एक बेहद घातक, नरसंहार करने वाला मनोवैज्ञानिक हथियार है, जो सब कुछ नष्ट कर देता है। यह जान बूझकर किया गया प्रयास है, ताकि दूसरों को भारत के खिलाफ़ निष्क्रिय या आक्रामक तरीके से लामबंद होने के लिए उकसाया जा सके, उन्हें भारत पर आक्रमण और भारतीयों और हिंदुओं के खिलाफ़ नसली सफ़ाई के लिए तैयार किया जा सके। लक्ष्य भारतीयों को बड़े पैमाने पर और गंभीर रूप से नीचा दिखाना है, ठीक वैसे ही जैसे नाज़ी जर्मनी और यूरोप के अन्य हिस्सों में यहूदियों के साथ किया गया था, ताकि कई लोग भारतीयों के खिलाफ़ भी नरसंहार करने की इच्छा रखें। फ़ॉर्मूला वही है। हर बार जब भारतीयों या हिंदुओं को नसली सफ़ाई या नरसंहार का शिकार बनाया जाता है, तो उनकी आसानी से उपलब्ध नफ़रत की कहानी उत्प्रेरक का काम करती है। हर बार जब ये हिंदू विरोधी नरसंहार और जातीय सफ़ाई होती है, तो पश्चिमी मीडिया और संबंधित अकादमिक प्रचारक अपराधों को मिटाने, नकारने और पूरी तरह से सफ़ाई देने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, जबकि मारे गए हिंदुओं को अपराधी के रूप में पेश करते हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि उनके इरादे हिंदू विरोधी हैं और वे इसमें शामिल हैं। किसी भी लड़ाई में, यहाँ तक कि इज़राइल और हमास के बीच भी, वे यहूदियों के साथ ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं।

इसके अलावा, उनका नैरेटिव लगातार हिंदू समुदाय के खिलाफ़ घटिया, बदनामी करने वाले और बांटने वाले प्रोपेगेंडा का झरना है, जिसमें भारतीय सँस्कृति और क्षेत्रों के सभी लोगों के खिलाफ़ गंभीर सैन्य, भू–राजनीतिक और नस्लवादी इरादे शामिल हैं। हमेशा की तरह, वे भारत में तबाही, गहरे बंटवारे, दंगे, अंदरूनी कलह, गृह युद्ध, बड़े पैमाने पर विनाश और आत्म–विनाश फैलाने की एक काली साज़िश के हिस्से के रूप में एक चुनिंदा, सनसनीखेज कहानी पेश करते हैं। धर्म, अधर्म, धार्मिक गुट, गहरे या हल्के रंग की त्वचा, भाषा, क्षेत्रवाद, राजनीतिक विचारधाराएँ, जाति, लिंग, ऐतिहासिक और आर्थिक असमानताएँ, पेशे, इतिहास का अकादमिक हेरफेर, आनुवंशिकी, पुरातत्व, और आर्यन आक्रमण सिद्धांत का अकादमिक हेरफेर। जब तक यह भारतीयों या पड़ोसी देशों के बीच दुश्मनी भड़का सकता है, वे अपने पास मौजूद हर हथकंडे का इस्तेमाल करते हैं। उनकी खास रणनीति फूट डालना और अंदरूनी कलह पैदा करना है। बांटो और राज करो एक पुराना लेकिन बेतुका रूप से असरदार तरीका है। इसका इस्तेमाल अभी भारतीयों के बीच आत्म–विनाश और गृह युद्ध भड़काने के लिए किया जा रहा है। अपने नुकसान पहुँचाने वाले और ध्रुवीकरण करने वाले मिशन को हासिल करने के लिए, वे भारत और दूसरी जगहों पर स्थानीय प्रोपेगेंडा करने वालों का भी इस्तेमाल करते हैं।

प्रोपेगेंडा एक खतरा है। कोई भी किसी भी सभ्यता की अनिश्चित काल तक आलोचना कर सकता है। हम जानते हैं कि पश्चिम द्वारा यहूदियों पर लगातार अत्याचार के कारण होलोकॉस्ट, कई अत्याचार, सजातीय सफ़ाई, निष्कासन, रोज़गार पर प्रतिबंध, यहूदी बस्ती बनाना, बहिष्कार आदि हुए। अगर आप नहीं समझते हैं तो नस्लवाद, यहूदी–विरोध, यहूदी–विरोधी साज़िश के सिद्धांतों, प्रोपेगेंडा, मनोवैज्ञानिक संचालन आदि और उनके भयानक परिणामों, खासकर यहूदियों के लिए, के बारे में जानने की कोशिश करें। इसी तरीके का इस्तेमाल भारतीयों और भारत

हर बार जब भारतीयों या हिंदुओं को नसली सफ़ाई या नरसंहार का शिकार बनाया जाता है, तो उनकी आसानी से उपलब्ध नफ़रत की कहानी उत्प्रेरक का काम करती है। हर बार जब ये हिंदू विरोधी नरसंहार और जातीय सफ़ाई होती है, तो पश्चिमी मीडिया और संबंधित अकादमिक प्रचारक अपराधों को मिटाने, नकारने और पूरी तरह से सफ़ाई देने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, जबकि मारे गए हिंदुओं को अपराधी के रूप में पेश करते हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि उनके इरादे हिंदू विरोधी हैं और वे इसमें शामिल हैं।

के खिलाफ़ किया जा रहा है।

हिंदू सँस्कृति का इस्तेमाल हिंदुओं और भारत को बदनाम करने के लिए कैसे किया जा रहा है। जबकि हिंदू विरोधी 'गौमूत्र' के ताने भारतीय इस्लामी–वामपंथी माहौल में आम हो गए हैं, अमेरिका फर्स्ट एक्टिविस्ट के रूप में खुद को छिपाने वाले अमेरिकी ईसाई श्रेष्ठतावादी अब एक बहस में हिंदुओं के खिलाफ उसी गाय के पेशाब और गोबर के ताने इस्तेमाल कर रहे हैं।

मार्च 2024 का होने के बावजूद, एक वीडियो वायरल हुआ है, जिसमें स्टू पीटर्स, एक हिंदू–नफरत करने वाला धोखेबाज जो 'भारत को बहुत अच्छी तरह से जानने' का दावा करता है, भारतीयों को बिंदी वाले तिलचट्टे और परजीवी कह रहा है। वीडियो में, पीटर्स दावा करता है कि भारतीय अपने चेहरों पर गोबर लगाते हैं और उससे अपने दांत साफ करते हैं साथ ही और भी कई झूठी बातें कहता है, जो एक आम नस्लवादी जो भारत से नफरत करता है, अलग–थलग घटनाओं की रिपोर्ट के आधार पर गढ़ सकता है और उसे पूरे भारत की घटना के रूप में पेश कर सकता है, जैसे कि अमेरिका में ईसाई बहुमत एक (काल्पनिक) आदर्श जगह है, या, अगर बिंदी वाले हिंदू भारतीयों को खत्म कर दिया जाए, तो वह बन जाएगी। यह वही अमेरिका है, जिसके व्यवसायों ने गंभीर बीमारियों के लिए दवाएँ बनाने के लिए गोमूत्र के पेटेंट का इस्तेमाल किया। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को कम करने के लिए गायों का इस्तेमाल करने वाले अमेरिकी भी वही लोग हैं।

निष्कर्ष

प्यू रिसर्च सेंटर के एक एनालिसिस के अनुसार, दुनियाँ भर में सभी प्रवासियों में 47 प्रतिशत ईसाई हैं, उसके बाद मुस्लिम (29 प्रतिशत), हिंदू (5 प्रतिशत), बौद्ध (4 प्रतिशत), और यहूदी (1 प्रतिशत) है। दुनियाँ के 1 अरब हिंदुओं में से सिर्फ 5 प्रतिशत विदेशी प्रवासी हैं। प्यू रिसर्चर स्टेफ़नी क्रैमर के अनुसार इसका कारण यह है कि हिंदू भारत में बहुत ज्यादा केंद्रित हैं और भारत में पैदा हुए लोगों के देश छोड़ने की संभावना बहुत कम है।

हिंदू धर्म के विपरीत, पश्चिमी बुद्धिजीवी भारत के उदय से डरने के बजाय उससे नाराज़ हैं। भारत की समृद्धि पश्चिमी हिंदू विरोधी लोगों को परेशान करती है, ठीक वैसे ही जैसे इज़राइल की सफलता पश्चिमी यहूदी विरोधी लोगों को परेशान करती है। हिंदुओं की बहुसँख्यक आबादी वाले एक शक्तिशाली, स्वतंत्र राष्ट्र की अवधारणा उनके लिए अस्वीकार्य है। जैसा कि उनके पूर्वजों ने सदियों पहले किया था, वे भारत को कमज़ोर और गरीब रखना अधिक पसंद करेंगे। इसलिए पश्चिमी हिंदू विरोधी लोगों के उद्देश्य कई भारतीय बुद्धिजीवियों के साथ–साथ भारत विरोधी इस्लामवादियों के उद्देश्यों से भी मिलते हैं। ऐसा इसलिए नहीं है कि भारतीय बुद्धिजीवी भारत विरोधी या हिंदू विरोधी हैं। इसका कारण यह है कि कई भारतीय बुद्धिजीवी उस धर्मनिरपेक्ष, कम्युनिस्ट और कमजोर भारत की कामना करते हैं, जो हिंदू विरोधी लोग चाहते हैं।

यह भी मज़ेदार है कि ईसाई वर्चस्ववादी इस बात पर ज़ोर–शोर से शिकायत करते हैं कि हिंदू उनकी नौकरियाँ, ज़मीन और दूसरी चीज़ों पर 'कब्ज़ा कर रहे हैं', जबकि वे अमेरिकी ईसाई मिशनरियों के बारे में चुप रहते हैं, जो टूरिस्ट वीज़ा पर भारत में घुसते हैं और वित्तीय प्रलोभन और चमत्कारिक रूप से बीमारियों को ठीक करने के बहाने हिंदुओं, सिखों, आदिवासी लोगों और अन्य समुदायों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करते हैं।

pankajjayswal1977@gmail.com

जयपुर में आयोजित हुआ धर्म रक्षा कार्यक्रम

विश्व हिंदू परिषद धर्मप्रसार द्वारा जामडोली जयपुर में आयोजित धर्म रक्षा कार्यक्रम में मुख्य वक्ता विहिप के क्षेत्र संगठन मंत्री श्री राजाराम जी ने कहा कि धर्म की रक्षा के लिए गुरु तेगबहादुर ने अपना शीश कटवाया एवं उनके पुत्र गुरु गोविंदसिंह जी का तो सम्पूर्ण परिवार ही धर्म की रक्षा करते हुए बलिदान हो गया। औरंगजेब द्वारा अनेक प्रलोभन एवं यातनाएँ देने के बावजूद भी दो छोटे साहबजादे जोरावर सिंह एवं फतेह सिंह के इस्लाम न स्वीकार करने के कारण, उन्हें जिंदा दीवार में चिनवा दिया गया था। बंदा बैरागी ने भी अपना बलिदान दिया।

स्वामी रघुवरदास जी पीठाचार्य अखिल भारतीय रामजन मंडल के संत

सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रांत धर्मप्रसार प्रमुख सीएम भार्गव रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि बाबूलाल डोटानिया व दिनेश जी रहे, अध्यक्षता राजूभाई मीणा ने की। संचालन सांगानेर विभाग मंत्री अशोक शर्मा ने किया। कार्यक्रम में विभाग संगठन मंत्री कुलदीप जी, प्रांत परावर्तन प्रमुख एडवोकेट रामलाल कुमावत सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पारिवारिक परंपरा को बोझ नहीं वैश्विक समाधान समझें

ललित गर्ग

वैश्विक परिवार दिवस, शान्ति और साझेदारी का एक दिन, संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रतिवर्ष 1 जनवरी को मनाया जाता है। यह दिवस संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी समारोह, 'शान्ति में एक दिन' से विकसित हुआ। समग्र विश्व एक वैश्विक ग्राम है और हम सभी इस बृहद्–परिवार का हिस्सा हैं। भारत ने तो वसुधैव कुटुम्बकम् का उद्‌घोष करते हुए समूची दुनियाँ को एक परिवार ही माना है। वैसे भारत की परिवार परम्परा दुनियाँ के लिये अनुकरणीय है। हम सभी एक परिवार हैं, चाहे हमारी नागरिकता, धर्म, जाति, सीमाएँ या नस्ल कुछ भी हों। समग्र मानव जाति को एक साथ आना चाहिए और प्रेम और शान्ति में विश्वास करना चाहिए और विश्व में सुख और आशा लाने हेतु इसका अभ्यास करना चाहिए। संसार संघर्षों, युद्धों, उपद्रवों, कष्ट और पीड़ा से भरा पड़ा है। यदि हम सभी एक साथ आएँ और दुनियाँ को प्रेम और धैर्य से ठीक करें, तो हम सभी खुशी से और अपने हृदयों में आशा के साथ रह सकते हैं। वैश्विक परिवार दिवस विविधता एवं एकता और विश्व शान्ति और अहिंसा महत्त्व के बारे में जागरूकता लाता है।

इस दिवस की शुरुआत 1997 में हुई जब संयुक्त राष्ट्र महासभा ने नव सहस्राब्दी के पहले दिन से विश्व के बच्चों के लिए शांति और अहिंसा की सँस्कृति के अंतर्राष्ट्रीय दशक की शुरुआत की। लिंडा ग्रोवर ने अमेरिका में इसे बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसे बढ़ावा देने के अन्य प्रयासों में 'वन डे इन पीस – 1 जनवरी 2000' जैसी पुस्तकें शामिल थीं। यह पुस्तक भविष्य में एक ऐसे दिन की अवधारणा पर आधारित थी, जहाँ केवल शांति हो और कोई युद्ध न हो। हालांकि, यह एक नए शांतिपूर्ण विश्व की शुरुआत मात्र थी और 1999 में, संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों को उस वर्ष के पहले दिन को शांति निर्माण की रणनीतियों को विकसित करने के लिए समर्पित करने का निमंत्रण मिला। इस दिन के सकारात्मक प्रभाव को देखते हुए, संयुक्त राष्ट्र ने 2001 में वैश्विक परिवार दिवस को वार्षिक आयोजन घोषित कर दिया।

परिवार मानव जीवन की वह मूल इकाई है, जहाँ व्यक्ति का भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक निर्माण होता है। भारतीय संदर्भ में परिवार केवल रक्त–संबंधों का समूह नहीं रहा, बल्कि वह सँस्कारों की पाठशाला, शांति, सहयोग एवं सौहार्द की प्रयोगभूमि और जीवन–मूल्यों का आधार रहा है। इसी परिवार–परंपरा ने भारत को सदियों तक सामाजिक स्थिरता, अहिंसा, सहिष्णुता और मानवीय करुणा का देश बनाए रखा। आज विडंबना यह है कि जिस भारतीय परिवार व्यवस्था को दुनियाँ एक आदर्श मॉडल के रूप में देख रही है, उसी भारत में वह धीरे–धीरे उपेक्षा और विस्मृति का शिकार होती जा रही है।

प्रत्येक वर्ष परिवार की भूमिका, उसकी बदलती संरचना और सामाजिक प्रासंगिकता पर विचार करने का अवसर देने वाला वैश्विक परिवार दिवस आज के समय में केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं रह गया है, बल्कि वह आधुनिक समाज की सबसे गहरी विडंबनाओं और चुनौतियों को उजागर करने वाला एक चिंतन–दिवस बन गया है। परिवार मानव जीवन की वह मूल इकाई है, जहाँ व्यक्ति का भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक निर्माण होता है। भारतीय संदर्भ में परिवार केवल रक्त–संबंधों का समूह नहीं रहा, बल्कि वह सँस्कारों की पाठशाला, शांति, सहयोग एवं सौहार्द की प्रयोगभूमि और जीवन–मूल्यों का आधार रहा है। इसी परिवार–परंपरा ने भारत को सदियों तक सामाजिक स्थिरता, अहिंसा, सहिष्णुता और मानवीय करुणा का देश बनाए रखा। आज विडंबना यह है कि जिस भारतीय परिवार व्यवस्था को दुनियाँ एक आदर्श मॉडल के रूप में देख रही है,

उसी भारत में वह धीरे–धीरे उपेक्षा और विस्मृति का शिकार होती जा रही है।

वैश्वीकरण, शहरीकरण, प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी जीवनशैली ने परिवार को सुविधा–केंद्रित इकाई में बदल दिया है। संयुक्त परिवारों का विघटन, एकल परिवारों का बढ़ना और रिश्तों में औपचारिकता का प्रवेश इस परिवर्तन की स्पष्ट पहचान है। माता–पिता दोनों के कार्यरत होने की स्थिति में बच्चों के साथ समय बिताना एक चुनौती बन गया है। परिणामस्वरूप बचपन, जो कभी परिवार के स्नेह, संवाद और अनुभवों से संवरता था, आज स्क्रीन, अकेलेपन और भावनात्मक रिक्तता के बीच पनप रहा है। बच्चों के जीवन में माता–पिता की अनुपस्थिति केवल समय की कमी नहीं है, बल्कि वह सुरक्षा, संवाद और मार्गदर्शन की कमी भी है। परिवार का वह सहज वातावरण, जहाँ प्रश्न पूछे जा सकते थे, गलतियाँ स्वीकार की जा सकती थीं और भावनाएँ साँझा की जा सकती थीं, आज धीरे–धीरे सिमटता जा रहा है। बुजुर्ग, जो कभी परिवार की धुरी हुआ करते थे, अनुभव और सँस्कार के संवाहक थे, आज कई घरों में हाशिये पर खड़े दिखाई देते हैं। उनके पास समय नहीं, धैर्य नहीं और कभी–कभी सम्मान भी नहीं बचा। यह स्थिति केवल पीढ़ियों के बीच दूरी नहीं बढ़ा रही, बल्कि समाज को उसके नैतिक आधार से भी वंचित कर रही है।

दूसरी ओर यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि वैश्विक स्तर पर आज परिवार की भूमिका को नए सिरे से समझा जा रहा है। पश्चिमी देशों में, जहाँ अत्यधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता ने सामाजिक अकेलेपन को जन्म दिया, अब परिवार, साझेदारी और सामूहिक जीवन की पुनर्स्थापना पर गंभीर विमर्श हो रहा है। इसी क्रम में वैश्विक परिवार दिवस को केवल परिवार के रूप में नहीं, बल्कि शांति, सहयोग और साझेदारी के प्रतीक के रूप में भी देखा जाने लगा है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में इस दिवस को शांति और साझेदारी के वैश्विक दिवस के रूप में भी परिवार और मानवीय संबंधों के महत्व को रेखांकित किया जाता है। यह संकेत देता है कि परिवार केवल निजी जीवन की इकाई नहीं, बल्कि वैश्विक शांति और सामाजिक संतुलन की आधारशिला भी है।

दुनियाँ भर में संस्कृतियाँ और धर्म अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि पूरी मानव जाति एक बड़ा परिवार है, जो एकजुट होकर ही जीवित रह सकती है। इस वर्ष वैश्विक परिवार दिवस की थीम "परिवार, शिक्षा और कल्याणः आज और भविष्य" इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि परिवार की भूमिका केवल बच्चों को पालने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह शिक्षा का पहला केंद्र और कल्याण का स्थायी आधार है।

वैश्विक परिवार दिवस की प्रासंगिकता इसी बिंदु पर सबसे अधिक उभरकर सामने आती है कि परिवार केवल रहने की व्यवस्था नहीं, बल्कि जीने की सँस्कृति है। परिवार में बिताया गया समय निवेश है, व्यय नहीं। बच्चों के साथ संवाद, बुजुर्गों के साथ सहभागिता और रिश्तों के बीच संवेदनशीलता समाज के दीर्घकालिक स्वास्थ्य की गारंटी है। यदि आज परिवार टूट रहे हैं, तो उसका प्रभाव केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वह सामाजिक असंतुलन, मानसिक तनाव और मूल्यहीनता के रूप में व्यापक रूप से सामने आएगा। इस संदर्भ में आवश्यक है कि हम परिवार को नए दृष्टिकोण से देखें। आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। कार्य और परिवार के बीच प्राथमिकताओं का पुनर्निर्धारण हो। डिजिटल सुविधाओं के साथ मानवीय संवाद को भी उतना ही महत्व दिया जाए। बच्चों के लिए समय निकालना दायित्व नहीं, बल्कि भविष्य के समाज में निवेश के रूप में समझा जाए। बुजुर्गों को केवल सहारा नहीं, बल्कि मार्गदर्शक के रूप में पुनः स्वीकार किया जाए।

वैश्विक परिवार दिवस और शांति व साझेदारी का वैश्विक संदेश हमें यह सिखाता है कि परिवार जितना सशक्त होगा, समाज उतना ही शांत और सहयोगी बनेगा। परिवारों में संवाद होगा तो समाज में टकराव कम होंगे। परिवारों में साझेदारी होगी तो राष्ट्रों के बीच भी सहयोग की भावना मजबूत होगी। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत अपनी पारिवारिक परंपरा को बोझ नहीं, बल्कि वैश्विक समाधान के रूप में देखे। अंततः वैश्विक परिवार दिवस हमें आत्ममंथन का अवसर देता है। यदि परिवार सशक्त हुए तो शांति, साझेदारी और मानवीय मूल्यों का भविष्य सुरक्षित रहेगा। भारतीय परिवार परंपरा आज भी प्रासंगिक है, आवश्यक है कि हम उसे समयानुकूल रूप देते हुए अपने जीवन के केंद्र में पुनः स्थापित करें, क्योंकि मजबूत परिवार ही मजबूत समाज और शांत विश्व की आधारशिला होते हैं।

lalitgarg11@gmail.com

वामपंथियों ने जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय की छवि खराब की है

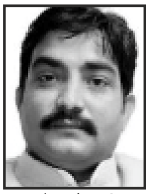

डॉ. प्रवेश कुमार

वामपंथियों ने जवाहर लाल नेहरू विश्व–विद्यालय की छवि खराब की है। दुनियाँ में अपने शैक्षणिक गतिविधि, उत्कृष्टता के लिये जाने जाना वाला जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय गाहे–बगाहे चर्चा में आ ही जाता है। इस बार चर्चा का कारण है वामपन्थी संगठनों के द्वारा भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी जी, देश के गृहमंत्री अमित शाह जी एवं देश के दो बड़े उद्योगपति अंबानी और अडानी तथा भारत के सनातन हिंदू धर्म को लेकर अभद्र टिप्पणी की है।

अंबानी–अदानी की कब्र खुदेगी जेएनयू की धरती पर, अंबानी–शाह की कब्र खुदेगी जेएनयू की धरती पर, मोदी–शाह की कब्र खुदेगी जेएनयू की धरती पर, जेएनयू की लाल मंडी में भगवा आतंक, भगवा जलेगा, बीजेपी आरएसएस एबीवीपी। हम इसकी एक स्वर में निन्दा करते है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय शिक्षक मंच (जेएनयूटीएफ) ने भी वामपन्थी छात्रों के इस कृत्त की निंदा एक प्रेस स्टेटमेंट के माध्यम से की है।

विदित हो कि वामपंथी छात्र संगठनों द्वारा यह कार्यक्रम कथित रूप से उस निर्णय के विरोधस्वरूप आयोजित किया गया, जिसमें भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा देशविरोधी गतिविधियों के मामलों में संलिप्त आरोपियों शरजिल इमाम एवं उमर खालिद को जमानत प्रदान न किये जाने का निर्णय बरकरार रखा।

हमारा मानना है कि न्यायालय के निर्णयों के विरोध में वैचारिक बहस लोकतांत्रिक ढांचे का हिस्सा अवश्य हो सकती है, कितु न्यायपालिका के सम्मान को ठेस पहुँचाने वाली, हिंसक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाली या राष्ट्र–विरोधी संदर्भो में प्रयुक्त भाषा किसी भी प्रकार स्वीकार्य नहीं हो सकती।

जेएनयू परिसर के साबरमती छात्रावास क्षेत्र में आयोजित ''गुरिल्ला ढाबा'' जैसे आयोजन के माध्यम से उग्र वामपंथी हिंसा, नक्सलवादी सोच और ''वार–फेयर'' कल्चर को सामान्य बनाने का प्रयास किया जाना अत्यंत चिंताजनक है। परिषद के अनुसार, यह प्रवृत्ति सामान्य पारिवारिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों, युवाओं को वैचारिक भटकाव, उग्रवाद और शत्रुतापूर्ण राजनीतिक सँस्कारों की ओर धकेलने का माध्यम बन सकती है, जिसका प्रभाव समाज और राष्ट्र दोनों के लिए घातक है। इससे पूर्व भी परिसर में उग्र–वामपंथी समूहों द्वारा सुरक्षा बलों के विरुद्ध हिसा करने वाले तत्वों, नक्सलवाद से जुड़े कुख्यात नामों हिडमा एवं बसवा राजू तथा अफजल गुरु जैसे आतंकवाद के दोषसिद्ध मामलों में शामिल व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति और महिमामंडन जैसी प्रवृत्तियाँ सामने आती रही हैं। हम मानते है कि ऐसी घटनाएँ शैक्षणिक सँस्थानों के चिन्तन–परिवेश को प्रदूषित करती हैं और विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण की मूल भावना से विचलन का कारण बनती हैं।

यह सही है कि जे. एन. यू. की पहचान एक उन्मुकत वातावरण में डिबेट, चर्चा–परिचर्चा रही है, अपनी स्थापना से ही व्यवस्था बदलाव को लेकर यहाँ का छात्र समाज में अपनी

आवा़ज को बुलन्द करता रहा है। ये वही जे. एन. यू. है, जिसने देश की सबसे म़जबूत प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी तक को काले झंडे दिखा दिये थे, सत्ता और सरकार से दो–दो हाथ करने का मादा इस विश्वविद्यालय में बहुत. खूब रहा है। देश के तमाम नेताओ एवं कईं देशों में भारत के प्रशासनिक राजदूत एवं मंत्री इस विश्वविद्यालय ने दिए है वहीं इसी विश्वविद्यालय में ''भारत तेरे टुकड़े होंगे इँसा अल्लाह'', ''अफ़जल हम शर्मिदा हैं तेरे कातिल ज़िदा हैं'' के नारे भी लगाए गये हैं। वहीं इस विश्वविद्यालय के भीतर वामपन्थी धड़े के शिक्षकों के द्वारा छात्रों के मन में भारत की सनातन सँस्कृति, देशज ज्ञान परम्परा के विरुद्ध बोले–जाने वाले शैक्षिक भाषणों ने एवं कुछ चुनिंदा लेखक, इतिहासकारों के लेखों को ही कोर्स स्ट्रक्चर का हिस्सा बनाना, यहाँ के छात्रों को एकांगी भी बनाता है।

वहीं छात्रों की शिक्षकों के प्रति निर्भरता ने छात्रों को शिक्षक का गुलाम ही बनाया है, जो शिक्षक पढ़ाता है वही पेपर भी बनाता है, अंत में पेपर भी वही जाँचता है, बी.ए. से लेकर पी.एच.डी. तक शिक्षक की निर्भरता छात्रों को अधिकतर शिक्षक के विचार से जोड़े रखता है। वहीं कई बार ये भी देखने में आता है कि शिक्षकों के मुद्दे पर छात्र भी रैलियाँ निकालते हैं। हम अगर जेएनयू में वामपंथी उपद्रव का इतिहास लिखें, तो कितना ही कुछ लिखा जा सकता है, जो कि भारत और उसके सनातनी सँस्कृति के ख़िलाफ़ है। हमें ये मालूम हो कि जहाँ विश्वविद्यालय में वामपंथी छात्र संगठनों का दबदबा है, तो वहीं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसे सनातनी, भारत के देशज चिंतन में आस्था रखने वाले छात्र संगठन भी है।

यही कारण है कि जब वामपंथी भारत के भाव, भारत की हिंदू आस्था से जुड़े प्रतीकों के ख़िलाफ़ कुछ करते व लिखते हैं, तो परिषद इसकी मुखाल़फत करता है। यही कारण है कि जब वर्ष 2013 में ''गाय माँस पार्टी'' का आयोजन वामपंथी छात्र संगठनों द्वारा किया जाता है, तो परिषद खुल के इसका विरोध करती है और प्रशासन को इस आयोजन को रद्द करना पड़ता है। वहीं इसी वर्ष 2013 सितम्बर में ''महिषासुर शहादत दिवस'' का आयोजन भी इसी जे.एन.यू. में किया जाता है, माँ दुर्गा को वैश्या तक भी कहा जाता है। रामनवमीं के दिन वामपन्थी छात्र संगठनों द्वारा फिर से 2013 को दोहराया गया है, कावेरी हास्टल के रेज़िडेंट छात्रों के द्वारा ''रामनवमी पूजा एवं हवन'' का आयोजन किया गया, इसके पोस्टर भी लगे थे, ये सब देख वामपन्थी संगठनों ने कावेरी छात्रावास के छात्रों को धमकाते हुए, इसे रद्द करने को कहा। इस पर तमाम रेज़िडेंट छात्रों ने इसकी सूचना अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ जुड़े छात्रों की दी, जब पूजा प्रारम्भ हुई, तो पहले वामपन्थी संगठनों द्वारा इसका विरोध किया गया, जिस कारण ये पूजा कई घंटे विलम्ब से हुई। जब पूजा शुरू हुई तो वामपन्थी संगठनो द्वारा पूजा में बैठे छात्रों पर पत्थर से हमला किया गया, वहीं पूजा के ध्वज को भी फाड़ दिया गया, इसके बाद क्रिया की प्रतिक्रिया हुईं, जो बड़ी स्वाभाविक ही थी। इसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 8 छात्रों को गम्भीर चोट

आयीं, जो हास्पिटल में भर्ती हुए, वहीं दर्जनो को हल्की चोटें भी आयी थी, इसी में कुछ वामपन्थी छात्रों को भी चोट आयी थी। ये हमला कुछ ऐसा ही था, जैसा कि 5 जनवरी 2020 को वामपन्थी संगठनों द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के छात्रों को चिन्हित करके मारा पीटा गया, वहीं राष्ट्रवादी विचार के शिक्षकों को भी इसमें टारगेट किया गया।

वही कैम्पस स्थित ''स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा'' को भी क्षतिग्रस्त किया गया, वहीं इंटरनेट सर्वर रूम को भी क्षतिग्रस्त किया गया था। ये वही जेएनयू है, जहाँ वामपंथियो ने 2010 में दन्तेवाड़ा छत्तीसगढ़ में हमारे 70 से अधिक केंद्रीय पुलिस बल जवानो के शहीद होने पर वामपन्थी संगठन, जिसमें डीएसयू की मुख्य भूमिका थी, इस नक्सली जघन्यता पर जश्न मानने हेतु ''संगीतमयी रात्रि'' का आयोजन किया, जब अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने इसका विरोध किया, तो सभी वामपन्थी संगठन एक हो गए। इसी जे एन यू में वर्ष 2016 फरवरी में भारत के टुकड़े होने की बात हो रही थी, वहीं वामपन्थी शिक्षकों के द्वारा ''राष्ट्रवाद पर भाषण'' की एक श्रृंखला प्रारम्भ की गई, जिसमें जम्मू कश्मीर को भारत का हिस्सा नहीं माना गया, वही नागालैंड मणिपुर पर क़ब्जे की बात की गईं। ये सब इसी जवाहरलाल नेहरू विश्वविदृालय में हुआ है और हो रहा है।

वामपंथी ऐसा नहीं कि विश्वविद्यालयों में ही ऐसा कर रहे हैं, जहाँ पर भी ये थोड़ा भी म़जबूत हैं, वहाँ अपने विरोधी विचार से इसी तरह का बर्ताव करते हैं। केरल में कितने ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं को इन वामपंथी गुंडों ने मारा है, क्या इसे केरल की धरती भूल सकती है। पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा में इन्होंने कितना आतंक किया, किसी से नहीं छुपा है। नक्सलवाद के नाम पर विकास को रोकना और मासूम जनता को प्रताड़ित करना, इनका काम ही है। ये ही है विषैला वामपंथ, जिसने छात्रों के मानस को खराब कर इस देश की सँस्कृति एवं भारत के विरुद्ध विचार को पैदा किया है।

(वीर अर्जुन से साभार)

हिन्दू सम्मेलन भारतीय समाज में दे रहे हैं समरसता के भाव को मजबूती

— प्रहलाद सबनानी

27 सितम्बर 1925 को विजयादशमी के पावन दिवस पर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना जिन मुख्य उद्देश्यों को लेकर हुई थी, उनमें भारतीय समाज में एकता, सद्भावना एवं समरसता का भाव मजबूत करना एवं भारतीय नागरिकों के बीच सनातन सँस्कृति के सँस्कारों के अनुपालन को बढ़ावा देना भी शामिल हैं। भारतवर्ष में धर्म का अनुसरण करते हुए, अपने जीवन में प्रत्यक्ष रूप से धार्मिक सँस्कारों का आचरण करने वाली तपस्वी, त्यागी एवं ज्ञानी विभूतियाँ एक अखंड परम्परा के रूप में अवतरित होती आई हैं। इन्हीं महान विभूतियों के चलते ही भारत की एक राष्ट्र के रूप में वास्तविक रक्षा हुई है। अतः हम भारतीय नागरिकों को यह भली–भांति समझना होगा कि भारतीय समाज को समर्थ, धर्मनिष्ठ, प्रतिष्ठित बनाने में हम तभी सफल हो सकेंगे, जब हम भारत की प्राचीन परम्परा को युगानुकूल बनाकर एक बार पुनः इसे पुनर्जीवित करेंगे।

आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं और यदि हम संघ की 100 वर्षों की यात्रा पर दृष्टि डालें, तो ध्यान में आता है कि संघ के स्वयसेवकों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विचार और क्रियाशीलता के स्तर पर सक्रिय योगदान दिया है। वे अनेक क्षेत्रों में परिवर्तन के वाहक भी बने हैं। प्रारम्भ का सीमित संघ कार्य, समय के साथ व्यापक होता गया है। समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को समझते हुए स्वयंसेवक विविध आयामों में अपने सहयोगियों के साथ क्रियाशील बने हैं। परिणामतः संघ के उद्देश्य के अनुरूप, देश में हिंदुत्व का जागरण करने की दिशा में विशेष प्रगति हुई है। हिंदुत्व के जागरण से, समाज में जाति, वर्ग, भाषा इत्यादि के आधार पर होने वाले अनेक प्रकार के भेदभाव, धीरे धीरे कम होने लगे हैं। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन, अयोध्या मंदिर में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा, कुम्भ जैसे विराट आयोजन इत्यादि अनेक ऐसे अवसर आए हैं, जहाँ हिंदू समाज का एक संगठित, भव्य और उच्च आदर्शों से युक्त स्वरूप सामने आया है। यह दृश्य समाज में आत्मविश्वास जगाने वाला बन रहा है। हम सब मिलकर देश के भविष्य को उज्जवल एवं सुदृढ़ बना सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सकारात्मक वातावरण निर्मित कर सकते हैं। इसलिए ये हमारी राष्ट्रीय एकात्मता को सुदृढ़ करने वाले आयोजन सिद्ध हुए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष केवल इतिहास की उपलब्धियाँ नहीं हैं बल्कि भविष्य की दिशा का संकल्प हैं।

आज जब हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की इस यात्रा को देखते हैं, तो यह भी स्पष्ट होता है कि हिंदुत्व और इसकी परम्पराओं पर लोगों का विश्वास बढ़ा है। समाज के अनेक लोग इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं और इसका अनुभव भी कर रहे हैं। हिंदुत्व की इस जागृति के कारण लोग अब हिंदू होने में गर्व का अनुभव कर रहे हैं। एक समय था जब सार्वजनिक जीवन में हिंदू समाज की कमियों को ही उजागर किया जाता था, जिससे अनेक लोग हिंदुत्व की अच्छाईयों को पहचान नहीं पाए, किंतु अब स्थिति बदल रही है। लोग अपने पूर्वजों के धर्म और परम्पराओं को महत्व देने लगे हैं। वे अपने बच्चों के नामकरण से लेकर विवाह पद्धति तक में हिंदू सँस्कारों का समावेश कर रहे हैं। घर की परम्पराओं को आदरपूर्वक अपनाया जा रहा है।

इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्य है एक सच्चरित्र, प्रामाणिक और सँस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करना। ऐसी पीढ़ी समाज का वातावरण सुधार कर घर और समाज में सुख शांति स्थापित कर सकती है। इसलिए, इन मूल्यों और सँस्कारों को महत्व देने और उन्हें अपने जीवन में उतारने के प्रयास आज घर–घर में होने लगे हैं। लोग अब ऐसे सभी मंचों और माध्यमों से जुड़ने के लिए प्रयत्नशील हैं, जो इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ को भी लोग इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण माध्यम मानते हैं और विश्वासपूर्वक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ने का उत्साह दिखा रहे हैं। जैसे–जैसे हिंदुत्व पर विश्वास बढ़ रहा है, वैसे–वैसे भारत के प्रति श्रद्धा और विश्वास, व्यापक और गहरा हो रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि "वसुधैव कुटुंबकम्" के आदर्श पर चलकर भारत न केवल अपने समाज को सशक्त करेगा, बल्कि पूरी दुनियाँ को शांति, सद्भाव और सहयोग का संदेश देकर विश्वगुरु की भूमिका निभाएगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपनी स्थापना के समय लिए गए संकल्पों को शीघ्र ही पूर्ण करने के उद्देश्य से अपने इस शताब्दी वर्ष में कुछ विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय समाज को अपने नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजग करने, पर्यावरण के प्रति सचेत करने, नागरिकों में स्व के भाव को जगाने एवं स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने, कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से पारिवारिक भावना जागृत करने एवं समाज में समरसता के भाव को सुदृद्ध करने के लिए गम्भीर प्रयास किए जा रहे हैं। वर्ष 2025 में विजयादशमी के पावन दिवस पर पूरे देश में संघ की समस्त शाखाओं (देश भर में संघ की 83,000 से अधिक शाखाएँ चल रही हैं) के स्वयसेवकों द्वारा गणवेश में बस्ती स्तर पर, 2 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2025 की बीच, विशाल पथ संचालनों का आयोजन कर शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों का शुभारम्भ किया गया था। देश भर में आयोजित किए गए इन पथ संचलनों को समाज का भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ था। दूसरे कार्यक्रम के रूप में संघ के स्वयसेवकों द्वारा अपनी बस्ती एवं मोहल्लों में हिंदू समाज के परिवारों के बीच, 15 नवम्बर से 30 नवम्बर 2025 के बीच, व्यापक गृह सम्पर्क अभियान को सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया है। अब तीसरे कार्यक्रम के रूप में पूरे देश में एक लाख से अधिक हिंदू सम्मेलनों का आयोजन, 20 दिसम्बर 2025 से 20 जनवरी 2026 के बीच, किया जा रहा है। हिंदू सम्मेलनों का आयोजन संघ द्वारा नहीं, बल्कि सकल हिंदू समाज द्वारा बस्ती स्तर पर हो रहा है। अभी तक देश भर में सकल हिन्दू समाज द्वारा आयोजित किए गए हिंदू सम्मेलनों में भारतीय नागरिकों द्वारा भारी सँख्या में भागीदारी देखने में आई हैं। विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में मंडल स्तर पर आयोजित किए जा रहे इन विराट हिंदू सम्मेलनों में ग्रामीण नागरिकों की भारी मात्रा में उत्साहपूर्वक भागीदारी दिखाई दी है।

उक्त हिन्दू सम्मेलनों में न केवल मातृशक्ति सहित सकल हिन्दू समाज की उत्साहपूर्वक भागीदारी हो रही है, बल्कि साधु एवं सन्त महात्माओं द्वारा भी खुले ह्रदय से आशीर्वचन प्रदान किए जा रहे हैं। कुल मिलाकर इन हिन्दू सम्मेलनों की सकल हिन्दू समाज द्वारा भूरि–भूरि प्रशंसा की जा रही है। इन सम्मेलनों का आयोजन दरअसल सकल हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा मिलकर किया जा रहा है, जिससे समाज के समस्त अंगों में आपस में भाईचारा पुष्ट हो रहा है। छोटे–छोटे आपसी मतभेद समाप्त हो रहे हैं एवं विशेष रूप से युवा नागरिकों को हिंदू सनातन सँस्कृति के सँस्कारों से अवगत होने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इन हिन्दू सम्मेलनों के आयोजन का उद्देश्य भी सनातन सँस्कृति, सनातन धर्म और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करना है, जिसकी प्राप्ति होती हुई दिख रही है।

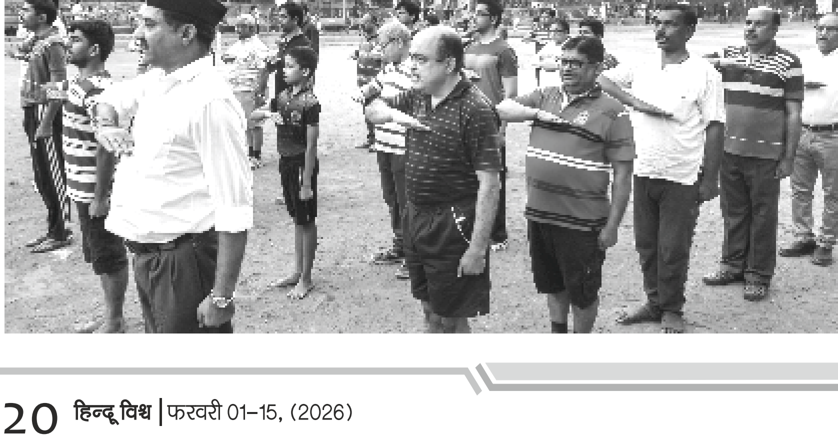

आज हिंदुत्व यदि सशक्त होता है, तो, यह न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे विश्व के हित में होगा, क्योंकि, आज विश्व के विभिन्न देशों में फैली अशांति को दूर करने में केवल सनातन हिंदू सँस्कृति ही सक्षम दिखाई दे रही है और इस विषय को विभिन्न देशों में फैले भारतीय मूल के नागरिकों के माध्यम से विकसित एवं अन्य देशों के नागरिक भलीभांति समझने लगे हैं, क्योंकि इन देशों में निवासरत भारतीय मूल के नागरिक सनातन हिंदू सँस्कृति के सँस्कारों का अनुपालन करते हुए दिखाई देते हैं, जिनमें "वसुधैव कुटुम्बकम" का भाव दिखाई देता है। इन देशों में समस्त भारतीय मूल के नागरिक शांतिपूर्वक अपना जीवनयापन करते हैं एवं वहाँ की स्थानीय अर्थव्यवस्था में अपना सशक्त योगदान देते हुए दिखाई देते हैं। और फिर भारत के भी आज विश्व के लगभग समस्त देशों के साथ दोस्ताना सम्बंध हैं, भारत ने कभी भी किसी देश की जमीन पर कब्जा करने के उद्देश्य से किसी देश के साथ युद्ध नहीं किया है। भारत सदैव से ही "जियो और जीने दो" के सिद्धांत का अनुपालन करता आया है। बल्कि विश्व के अन्य देशों के नागरिक, जैसे, शक, हूण, कुषाण, पारसी, यहूदी, ईसाई एवं मुस्लिम भी भारत आकर आसानी से यहाँ रच बस गए हैं। आज पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है, जिसमें मुस्लिम समाज के समस्त फिरके पाए जाते हैं।

संघ की दृष्टि बहुत स्पष्ट है कि सम्पूर्ण भारत की पहचान जिससे है, उस आध्यात्म आधारित एकात्म और सर्वांगीण जीवन दृष्टि को दुनियाँ हिंदुत्व अथवा हिंदू जीवन दृष्टि के नाते जानती है, उस हिंदुत्व को जगाकर सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में जोड़कर निर्दोष और गुणवान हिंदू समाज के संगठन का यह कार्य, जो वर्ष 1925 में प्रारम्भ हुआ, वह आज भी निरन्तर जारी है और आगे भी जारी रहेगा। सकल हिंदू समाज द्वारा आयोजित किए जा रहे हिन्दू सम्मेलन भी उक्त दृष्टि को ही साकार करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

prahlad.sabnani@gmail.com

ग्रहों एवं राशियों से सम्बंधित रोग

राशियों और उनसे जुड़े संभावित रोग

- मेष : सिरदर्द, नेत्र रोग, मानसिक तनाव, अनिद्रा।
- वृषभ : गला, थायरॉयड, श्वास नली, नाक, कान के रोग।
- मिथुन : फेफड़े, हाथ, कंधे, सांस की समस्याएँ, एलर्जी।
- कर्क : हृदय रोग, रक्त विकार, पेट की समस्याएँ डिप्रेशन।
- सिंह : पेट (उदर) विकार, वायु विकार, हृदय (भावनात्मक रूप से)।
- कन्या : पाचन (अपच), जिगर, तिल्ली, कमर दर्द, एलर्जी
- तुला : मूत्राशय, मधुमेह, मूत्र संबंधी रोग, त्वचा, पीठ दर्द।
- वृश्चिक : गुप्तरोग, हार्मोन संबंधी समस्याएँ, गुर्दे, बवासीर।
- धनु : लिवर, जांघ, कूल्हे, गठिया, हड्डियों और नसों के रोग।
- मकर : घुटने, वात रोग, चर्म रोग, जोड़ों के दर्द।
- कुंभ : मानसिक रोग, पैरों (पिंडलियों) की नसें, वैरीकोज वेन्स, ठंडी चीजें।
- मीन : एलर्जी, गठिया, ठंडी चीजों से बीमारियाँ, रक्त विकार।

जिस प्रकार जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथियाँ हमारे जीवन और उनसे जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रभावित करती हैं, उसी प्रकार हमारे शरीर की रचना एवं रोग भी इन्हीं ग्रहों की दशा एवं महादशा पर निर्भर करते हैं। कुछ ग्रह अकेले ही एक विशेष रोग को जन्म देते हैं, तो कुछ रोगों को कई ग्रह के योग जन्म देते हैं। ग्रह से सम्बन्धित रोगों का विवरण –

- **सूर्य** – नेत्र रोग, रतौंधी, अंधापन, हृदय रोग, रक्त चाप, हार्ट अटैक, हड्डियों के रोग।
- **चन्द्रमा** – रक्त क्षीणता, कमजोरी, नेत्ररोग, दृष्टिदोष, उन्माद, मानसिक रोग, सिर दर्द, सीने का दर्द, शीत–कफजन्य बीमारी, श्वास, उलझन, मिर्गी।
- **मंगल** – रक्त सम्बन्धी बीमारी, गुर्दे की बीमारी, पीलिया(जांडिस), कवल, रक्त, मूत्र संबंधी बीमारी, मज्जा सम्बन्धी बीमारी।
- **बुध** – कंठ–रोग, गल–रोग, हकलाना, श्वास, अस्थमा, आँतों के रोग, चर्म रोग, दाद खाज, अपरस, फोड़ा–फुन्सी आदि।
- **बृहस्पति** – सर्दी, खांसी, कफ, गले का रोग, वाणी सम्बन्धी दोष, लीवर, चर्बी, पाँव के रोग, लंगड़ापन, नितम्ब, कमर, स्तन के रोग, स्तनों का कम बढ़ना आदि।
- **शुक्र** – वीर्य क्षीणता, वीर्य में शुक्राणुओं का अभाव, गला, यौन विकृतियाँ, पुरुषत्व की कमी, भौतिकता से विमुखता आदि।
- **शनि** – योनी सम्बन्धी रोग, लिंग सम्बन्धी रोग, वायु विकार, मूर्छा, हिस्टीरिया, विषपान करने के रोग, जहरीला प्रभाव आदि।
- **राहु** – हृदय रोग, कैंसर, मिर्गी, वायु विकार, बवासीर, तिल्ली के रोग, गर्मी, लू का प्रकोप, चेचक, ताप ज्वर आदि।
- **केतु** – रक्त की कमी, खूनी दस्त, मूत्र से सम्बंधित रोग, हैजा, त्वचा सम्बन्धी रोग, नामर्दी, बवासीर, अजीर्ण, मधुमेह।

अधिकांश रोग ऐसे होते हैं, जो अकेले एक ग्रह के कारण नहीं होते। कभी–कभी दो या दो से अधिक ग्रहों की युति जातक को विशेष रोग के प्रति संवेदनशील बना देती है।

- सूर्य और चंद्र के मेल से नेत्र रोग अन्धता, हृदय रोग, जलंधर।
- सूर्य, मंगल, और केतु के योग से जोड़ों का दर्द।
- चन्द्र, केतु और सूर्य के प्रभाव से भेंगापन।
- सूर्य–शुक्र के योग से गुप्त इन्द्रियों के रोग।
- सूर्य, बुध और राहु के योग से अंतड़ियों का रोग।
- सूर्य और शनि के योग से वायु विकार।
- सूर्य और राहु के योग से दिल का दौरा।
- सूर्य, शनि और बुध से दमा।
- सूर्य, चंद्र और बुध के मेल से घबराहट।
- सूर्य, बुद्ध और शुक्र से चर्मरोग।
- सूर्य, शनि और राहु के योग से पोलियो हो जाता है।

संतों के मार्गदर्शन में विश्व हिन्दू परिषद की भूमिका पर मंथन

हरिद्वार/ऋषिकेश प्रवास के दौरान राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पदाधिकारियों की संतों से महत्वपूर्ण वार्ता

हरिद्वार/ऋषिकेश। विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार, केंद्रीय मंत्री एवं धर्माचार्य संपर्क प्रमुख अशोक तिवारी, क्षेत्र संगठन मंत्री मुकेश खाण्डेकर, प्रांत संगठन मंत्री अजय कुमार तथा क्षेत्र संयोजक बजरंग दल अनुज वालिया का प्रवास हरिद्वार एवं ऋषिकेश में रहा। इस दौरान देश के प्रमुख संत–महात्माओं से भेंट एवं विस्तृत संवाद हुआ।

संतों के साथ हुई वार्ता में भारत की वर्तमान सामाजिक, साँस्कृतिक एवं राष्ट्रीय परिस्थितियों के साथ–साथ बाँग्लादेश में हिंदू समाज पर हो रहे निरंतर अत्याचार, मंदिरों पर हमले, महिलाओं के उत्पीड़न एवं जबरन पलायन जैसे गंभीर विषयों पर गहन विचार–मंथन किया गया। सभी संतों ने एक स्वर में इन घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए हिंदू समाज की एकजुटता और संगठित प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद प्रारंभ से ही संत समाज के मार्गदर्शन में हिंदू समाज की रक्षा, धर्म–सँस्कृति के संरक्षण और पीड़ित हिंदुओं की आवाज को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँचाने का कार्य करती रही है। आज जब बाँग्लादेश सहित अनेक स्थानों पर हिंदुओं को उनकी आस्था के कारण निशाना बनाया जा रहा है, तब संतों का मार्गदर्शन हमें यह स्मरण कराता है कि संगठन का प्रत्येक कार्य सेवा, समरसता और साहस के साथ होना चाहिए। विहिप आने वाले समय में इन विषयों पर और अधिक सशक्त, संगठित एवं निर्णायक भूमिका निभाएगी।

क्षेत्र संगठन मंत्री मुकेश विनायक ने कहा कि संत समाज भारतीय राष्ट्र और सनातन सँस्कृति की आत्मा है। बाँग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार केवल वहाँ के हिंदुओं का विषय नहीं वरन समस्त विश्व से हिंदू समाज की पीड़ा है। इस विषय पर जनजागरण, सामाजिक एकता और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दबाव बनाने की दिशा में विहिप निरंतर कार्य करेगी।

प्रवास के दौरान यह भी निर्णय लिया गया कि संतों के मार्गदर्शन में समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ते हुए जागरूकता अभियान, संवाद कार्यक्रम एवं संगठित प्रयासों को और व्यापक रूप दिया जाएगा, ताकि हिंदू समाज आत्मसम्मान, सुरक्षा और साँस्कृतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ सके। विश्व हिन्दू परिषद ने संत समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, उनके मार्गदर्शन को संगठन की भावी दिशा के लिए अत्यंत प्रेरणादायी बताया।

सामजिक समरसता दिवस कार्यक्रम विहिप

मध्य भारत प्रान्त जिला भेल द्वारा सँस्कार शाला सेवा बस्ती, अरेडी, अयोध्या नगर में आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र संगठन मंत्री श्री जितेन्द्र जी पंवार, प्रान्त सह मंत्री जितेंद्र चौहान, प्रान्त सह संयोजक लोकेन्द्र जी, सेवा प्रान्त टोली सदस्य श्री पप्पू पालीवाल, विभाग मंत्री श्री जीवन शर्मा, विभाग सयोजक बजरंग दल श्री अभिजीत जी, जिला मंत्री श्री कमल जी, सुरेंद्र जी, प्रकाश जी, बबलू जी एवं संस्कार शाला के बच्चे एवं दीदी उपस्थित रही।

vhpmadhybharat@gmail.com

विहिप-उत्तर गुजरात में प्रांत सेवा कुम्भ-2026 का आयोजन

समाज के अंतिम पंक्ति तक सेवा का संकल्प

विश्व हिंदू परिषद के सेवा विभाग द्वारा आयोजित "सेवा कुम्भ–2026" के अंतर्गत एक भव्य एवं अनुशासित साँस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 11 जनवरी 2026 को गुजरात विश्व विद्यालय, नवरंगपुरा स्थित सीनेट हॉल, कर्णावती में संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े बच्चों, परिवारों तथा वंचित वर्गों के लिए शिक्षा, सँस्कार, स्वास्थ्य और स्वावलंबन के क्षेत्र में निरंतर चल रहे सेवा कार्यों को एक मंच पर प्रस्तुत करने का सशक्त प्रयास था। इस सेवा महोत्सव में सेवा कार्यों से जुड़े कार्यकर्ता, विभिन्न सेवा प्रकल्पों के संचालक, समाज के प्रबुद्धजन एवं विभिन्न क्षेत्रों के नेतृत्वकर्ता बड़ी सँख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य केवल सेवा गतिविधियों का प्रदर्शन नहीं, बल्कि समाज को सेवा–भाव से जोड़ते हुए "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है" के भाव को सुदृढ़ करना था।

कार्यक्रम को पावन मार्गदर्शन एवं आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करते हुए प.पू. श्री महंत शांतिगिरि जी महाराज (वडियावीर, तह. इडर) का सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिसने सम्पूर्ण वातावरण को श्रद्धा, प्रेरणा और ऊर्जा से परिपूर्ण कर दिया।

सेवा : निरंतर चलने वाली साधना –कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री आनंद जी हरबोला, अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख एवं केंद्रीय सह–मंत्री ने स्पष्ट किया कि सेवा कोई क्षणिक कार्य नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली सामाजिक साधना है। सेवा एक–दो दिनों या वर्षों तक सीमित न होकर पीढ़ियों तक समाज को सशक्त करने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि सेवा विभाग के प्रयासों से सेवा बस्तियों में रहने वाले बच्चों को मूल्य–आधारित शिक्षा एवं सँस्कार प्राप्त होते हैं, साथ ही राष्ट्र और धर्म के प्रति समर्पित कार्यकर्ता भी तैयार होते हैं। श्री हरबोलाजी ने धर्मांतरण जैसे संवेदनशील विषय पर भी समाज का मार्गदर्शन करते हुए बताया कि इसके पीछे सामाजिक उपेक्षा, संवाद की कमी, शिक्षा का अभाव और मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति न होना जैसे कारण प्रमुख हैं। इन चुनौतियों का समाधान समाज के प्रत्येक नागरिक को सम्मान, निरंतर संवाद, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आवश्यकता–आधारित सेवा कार्यों के माध्यम से ही संभव है।

गणमान्य अतिथियों की प्रेरक उपस्थिति – इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित उद्योगपति, सामाजिक कार्यकर्ता और संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे, जिनमें प्रमुख रूप से श्री दिलीपभाई प्रह्लादभाई पटेल (चेयरमैन–राज ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज एवं श्री ओंकार सेवा मिशन चौरिटेबल ट्रस्ट), श्री बाबूलाल करसनदास पटेल (चेयरमैन–धारा लाइफ साइंस प्रा. लि. एवं अध्यक्ष–खाखरिया फाउंडेशन, कर्णावती), श्री सुशील हांडा (मालिक–एबेलॉन क्लीन एनर्जी लिमिटेड), श्री अश्विनभाई पटेल (क्षेत्र मंत्री–विश्व हिंदू परिषद, गुजरात), श्री श्रीरंग राजे जी (क्षेत्र संगठन मंत्री–विश्व हिंदू परिषद, गुजरात), श्री शैलेषभाई पटेल (क्षेत्र सेवा प्रमुख–विश्व हिंदू परिषद, गुजरात), श्री हर्षदभाई गिलेटवाला (उत्तर गुजरात प्रांत अध्यक्ष), श्री मुकुंद वणिकर (उपाध्यक्ष–उत्तर गुजरात प्रांत), योगिनीबेन वाणिकर (उत्तर गुजरात प्रांत सेवा सह–प्रमुख) सहित उत्तर गुजरात प्रांत तथा विभिन्न जिलों के पदाधिकारी एवं सेवाभावी कार्यकर्ता बड़ी सँख्या में उपस्थित रहे। सभी ने सेवा क्षेत्र में चल रही गतिविधियों की मुक्तकंठ से सराहना करते हुए अपने अनुभव और मार्गदर्शन सांझा किए।

सेवा कार्यों की प्रभावी प्रस्तुति–कार्यक्रम के दौरान विश्व हिंदू परिषद – सेवा विभाग द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, सँस्कार और स्वावलंबन के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों का संक्षिप्त किंतु प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण किया गया। इनमें–निःशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिविर, बच्चों के लिए सँस्कार शालाएँ, महिलाओं के आत्मनिर्भरता हेतु सिलाई, मेहंदी, ब्यूटी पार्लर जैसी कौशल–आधारित प्रशिक्षण योजनाएँ, स्वरोजगार प्रारंभ करने के लिए आवश्यक किट एवं उपकरणों का वितरण जैसे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी गई। इन प्रयासों के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मसम्मान को बढ़ावा देने की सेवा विभाग की प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से सामने आई।

सँस्कार और सँस्कृति का संगम—कार्यक्रम का विशेष आकर्षण विभिन्न सँस्कार शालाओं के बच्चों द्वारा प्रस्तुत साँस्कृतिक एवं प्रेरणादायी नाट्य प्रस्तुतियाँ रहीं। इन प्रस्तुतियों ने उपस्थित जनसमूह को भावविभोर करते हुए सेवा और सँस्कार के महत्व को हृदय तक पहुँचाया।

समापन—संकल्प के साथ आगे बढ़ता सेवा पथ—"सेवा कुम्भ—2026" का समापन सहभोजन एवं आत्मीय संवाद के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ। आयोजक समिति द्वारा सभी अतिथियों, सेवाभावी कार्यकर्ताओं एवं नागरिकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए यह संकल्प दोहराया गया कि सेवा का यह यज्ञ निरंतर चलता रहेगा, ताकि समाज का कोई भी वर्ग स्वयं को उपेक्षित न महसूस करे।

सेवा, सँस्कार और समर्पण — इन तीन स्तंभों पर आधारित यह आयोजन निश्चित ही समाज को नई दिशा देने वाला सिद्ध हुआ और सभी उपस्थित जन इसे एक स्मरणीय अनुभव के रूप में अपने साथ लेकर लौटे।

प्रस्तुति : अश्विनभाई पटेल

मकर संक्रांति सामाजिक समरसता का पर्व,

भारतीय सँस्कृति की वैज्ञानिक व आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक : नितिन गौतम

बहादराबाद। बहादराबाद स्थित अशोक सिंघल सेवा धाम के अंतर्गत स्वामी ओमप्रकाशानंद तीर्थगंगा श्री जन सेवा न्यास द्वारा संचालित वात्सल्य वाटिका में मकर संक्रांति एवं सामाजिक समरसता कार्यक्रम का दिव्य, भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम न केवल एक पर्व का उत्सव था, वरन समाज को एकता, समरसता और सेवा के सूत्र में बाँधने का सशक्त संदेश भी लेकर आया है। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। वात्सल्य वाटिका के बच्चों द्वारा घोष वादन से अतिथियों का स्वागत एवं माँ सरस्वती की मधुर वंदना ने सम्पूर्ण वातावरण को राष्ट्रभक्ति और अध्यात्म से ओत—प्रोत कर दिया।

प्रकल्प प्रबंधक प्रदीप कुमार मिश्रा ने मंचासीन अतिथियों का परिचय कराते हुए श्रद्धेय अशोक सिंहल के चित्र पर पुष्प अर्पित कर एवं शाल भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गंगा सभा हरिद्वार के अध्यक्ष नितिन गौतम ने की। नितिन गौतम ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मकर संक्रांति भारतीय सँस्कृति का वह पर्व है जो धार्मिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तीनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक है, जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह दिन ऋतु परिवर्तन, स्वास्थ्य संतुलन एवं ऊर्जा संचरण से जुड़ा है, जबकि धार्मिक रूप से यह त्याग, दान और पुण्य का पर्व माना गया है। तिल, गुड़ और खिचड़ी जैसे आहार सामाजिक समानता और आपसी मधुरता का संदेश देते हैं, जिससे यह पर्व स्वाभाविक रूप से सामाजिक समरसता का प्रतीक बन जाता है।

राधेश्याम द्विवेदी संयुक्त क्षेत्र सेवा प्रमुख उत्तराखंड—उत्तर प्रदेश ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि बच्चे ही भारत का भविष्य हैं और उनके सर्वांगीण विकास के लिए समाज को सेवा भाव से आगे आना चाहिए। सामाजिक समरसता तभी सुदृढ़ होगी, जब समाज का प्रत्येक वर्ग एक—दूसरे के सुख—दुःख में सहभागी बने। विशिष्ट अतिथियों में प्रशांत कुमार सहायक श्रम आयुक्त, हरिद्वार, चंद्रशेखर मुख्य अभियंता, सिंचाई विभाग, उत्तराखंड, राकेश कुमार विभाग प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हरिद्वार, एन. गुप्ता एवं डॉ. अंबालिका उपस्थित रहे। राकेश कुमार ने बच्चों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए मकर संक्रांति को सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाने की परंपरा को समय की आवश्यकता बताया। उन्होंने कहा कि यह आयोजन समाज को यह संदेश देने में सफल रहा कि मकर संक्रांति केवल एक पर्व नहीं, वरन सामाजिक एकता, सेवा और समरसता का जीवंत उत्सव है, जो भारतीय समाज को सशक्त और सँस्कारित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अवसर पर वात्सल्य वाटिका के बच्चों द्वारा प्रस्तुत साँस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी उपस्थित जनों का मन मोह लिया। शिक्षिकाओं को कंबल भेंट कर उनके सेवा भाव का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रधानाचार्य अश्वनी शर्मा द्वारा किया गया। अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

कुंभ क्षेत्र के गंगा घाट पर गैर हिंदुओं के प्रवेश पर विश्व हिन्दू परिषद उत्तराखण्ड का मत

हरिद्वार (8 जनवरी 2026)। देवभूमि उत्तराखण्ड में हरिद्वार एवं ऋषिकेश के पवित्र गंगा घाट केवल भौगोलिक स्थल नहीं, अपितु भारतीय सनातन सँस्कृति, आस्था और साधना की जीवंत धरोहर है। इन गंगा के पवित्र घाटों का इतिहास हजारों वर्षों से तप, त्याग, स्नान, दान और मोक्ष की अवधारणा से जुड़ा रहा है। विशेष रूप से कुंभ मेला क्षेत्र तो सम्पूर्ण विश्व में हिन्दू आस्था का सर्वोच्च प्रतीक है, जहाँ करोड़ों श्रद्धालु शास्त्रोक्त मर्यादाओं के साथ स्नान एवं धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। हाल ही में प्रकाशित समाचारों के माध्यम से यह तथ्य पुनः प्रकाश में आया है कि हरिद्वार नगर पालिका की 110 वर्ष पुरानी नियमावली (1916 व 1953) में गंगा घाटों विशेषकर हर की पैड़ी एवं अन्य पवित्र स्थलों पर गैर–हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध का स्पष्ट उल्लेख है। यह नियम किसी प्रकार का नया निर्णय नहीं है, वरन हमारी ऐतिहासिक धार्मिक परंपराओं और साँस्कृतिक मर्यादाओं की रक्षा हेतु पूर्व से लागू रहा है। विश्व हिन्दू परिषद, उत्तराखण्ड का यह स्पष्ट मत है कि कुंभ मेला क्षेत्र के समस्त घाटों पर गैर–हिंदुओं का प्रवेश वर्जित किया जाना पूर्णतः जनभावनाओं के अनुरूप, शास्त्रसम्मत एवं ऐतिहासिक परंपराओं के अनुकूल है।

कुंभ मेला केवल एक आयोजन ही नहीं वरन हिन्दू समाज की सामूहिक चेतना और आस्था का महापर्व है, जहाँ पवित्रता, संयम और धार्मिक मर्यादा सर्वोपरि होती है। गत वर्षों में गंगा घाटों एवं आसपास के क्षेत्रों में मांस, मदिरा तथा अन्य अपवित्र गतिविधियों की घटनाओं ने हिन्दू समाज की भावनाओं को गहरा आघात पहुँचाया है। ऐसे में गंगा की निर्मलता, कुंभ की गरिमा और सनातन सँस्कृति की रक्षा के लिए कठोर एवं स्पष्ट नियमों का समान रूप से पालन अनिवार्य है। विश्व हिन्दू परिषद यह मांग करती है कि––

- कुंभ मेला क्षेत्र एवं सभी पवित्र गंगा घाटों को धार्मिक मर्यादा क्षेत्र घोषित किया जाए।
- गैर–हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध संबंधी ऐतिहासिक नियमों को कठोरता से लागू किया जाऐ
- मांस, मदिरा एवं अन्य अपवित्र गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध सुनिश्चित किया जाए। सभी घाटों पर समान व्यवस्था लागू हो, जिससे किसी प्रकार का भेदभाव या शिथिलता न रहे।

यह विषय किसी समुदाय के विरोध का नहीं है, बल्कि हिन्दू समाज की आस्था, परंपरा और साँस्कृतिक अस्मिता की रक्षा का है। राज्य सरकार एवं प्रशासन से अपेक्षा है कि वह जनभावनाओं का सम्मान करते हुए इन नियमों को पूर्ण रूप से लागू करे।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

विहिप द्वारा गोराघाट आदिवासी बस्ती में मनाया गया सामाजिक समरसता दिवस

विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता दिवस कार्यक्रम गोराघाट आदिवासी बस्ती में मनाया गया। जहाँ पर बस्ती के सभी बच्चों को गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र का अभ्यास कराया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद प्रांत अर्चक मंदिर संपर्क प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि आज जिस प्रकार से हिंदू सनातन धर्म है, वह वैज्ञानिक धर्म है। यह पर्व जो समरसता का पर्व है, मकर संक्रांति का पर्व है। भगवान सूर्य नारायण का पर्व है। क्योंकि भगवान सूर्य नारायण उत्तरायण हो रहे हैं, सबके जीवन में मंगल करें, ऐसी हम कामना करते हैं।

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष दिनेश जैन ने कहा कि हम भारत माता की जय बोलते हैं, भारत माता की रक्षा करने का कर्तव्य हमारा है। वरिष्ठ समाजसेवी महेंद्र शर्मा जी ने समरसता का गीत कराया हिंदू–हिंदू भाई–भाई, हिंदू हम सब एक हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विभाग महिला प्रमुख रश्मि रघुवंशी ने कहा कि हम सब भगवान राम की भक्त हैं, एक हैं एक रहेंगे। मांडवी

शर्मा द्वारा गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र का जाप कराया गया। कार्यक्रम का संचालन जिला समरसता प्रमुख विकास जैन बल्ली ने किया, बड़ी सँख्या में अनुसूचित जनजाति के बच्चे एवं समाज प्रमुख उपस्थित रहे। सभी को लड्डू वितरण किये, इसके उपरांत सभी के लिए वस्त्र वितरण किये गये।

deepakmishravhp@gmail.com

वात्सल्य वाटिका में तीन दिवसीय आचार्य अभ्यास वर्ग का भव्य शुभारंभ

सँस्कार, सेवा और साधना के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का संकल्प

बहादराबाद (9 जनवरी 2026)। विश्व हिंदू परिषद द्वारा संचालित अशोक सिंहल सेवाधाम वात्सल्य वाटिका के तत्वावधान में दिनांक 09 जनवरी 2026 से 11 जनवरी 2026 तक आयोजित तीन दिवसीय आचार्य अभ्यास वर्ग का आज विधिवत एवं गरिमामय शुभारंभ हुआ। यह अभ्यास वर्ग विश्व हिंदू परिषद उत्तराखण्ड के सेवा विभाग की उस दूरदर्शी सोच का सशक्त उदाहरण है, जिसके माध्यम से समाज की जड़ों को सँस्कारों से सींचने का सतत प्रयास किया जा रहा है।

उद्घाटन समारोह में अजय पारिक केंद्रीय मंत्री, अखिल भारतीय सेवा प्रमुख, विश्व हिंदू परिषद, राधेश्याम द्विवेदी संयुक्त क्षेत्र प्रमुख, उत्तर प्रदेश–उत्तराखण्ड एवं प्रदीप मिश्रा प्रांत उपाध्यक्ष, विश्व हिंदू परिषद की गरिमामयी उपस्थिति रही। इनके प्रेरक मार्गदर्शन में प्रथम दिवस के चारों सत्र सफलतापूर्वक संपन्न हुए।

अपने उद्बोधनों में वक्ताओं ने स्पष्ट किया कि सेवा विभाग केवल सामाजिक सेवा तक सीमित नहीं है, वह सँस्कार, सँस्कृति और सनातन मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन का सशक्त माध्यम है। वात्सल्य वाटिका जैसी परियोजनाएँ भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस अवसर पर आचार्य के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया गया कि आचार्य समाज का शिल्पकार होता है, जो बालकों के मन, विचार और आचरण को दिशा देता है। सँस्कारशालाओं में कार्यरत आचार्य केवल शिक्षक नहीं, वरन जीवन मूल्यों के संवाहक हैं, जिनके माध्यम से हिंदुत्व आधारित सँस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होते हैं। यह आचार्य अभ्यास वर्ग निश्चित रूप से सेवा, सँस्कार और संगठन के त्रिसूत्र के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

सभी प्रशिक्षिकाओं ने मार्गदर्शक वक्ताओं के विचारों से प्रेरित होकर हिंदुत्व को सर्वोपरि मानते हुए सँस्कार संवर्धन के दायित्व का संकल्प लिया तथा सँस्कारशालाओं के कुशल संचालन में पूर्ण सहभागिता निभाने का प्रण किया। इस अवसर पर यह विश्वास भी व्यक्त किया गया कि भारत का भविष्य इन सँस्कारित, जागरूक एवं कर्तव्यनिष्ठ महिलाओं के सुरक्षित हाथों में है। वर्तमान में क्षेत्र में वात्सल्य वाटिका द्वारा 25 सँस्कारशालाओं का सफल संचालन किया जा रहा है, जो सेवा विभाग की सक्रियता और प्रभावशीलता को दर्शाता है।

तीन दिवसीय सँस्कारशाला आचार्य प्रशिक्षण वर्ग का समापन आज गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। समापन सत्र में विश्व हिंदू परिषद उत्तराखंड–उत्तर प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र सेवा प्रमुख राधेश्याम द्विवेदी ने आचार्यों एवं कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में घर, विद्यालय एवं समाज में सँस्कारों का क्षरण गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि जब बालक, बालिकाएँ अपने साँस्कृतिक मूल्यों एवं जीवन व्यवहार से कटने लगते हैं, तब वे दुष्प्रवृत्तियों के दुष्चक्र में फँस जाते हैं। ऐसे में बाल्यावस्था से ही सँस्कारों का बीजारोपण कर ही सशक्त, समरस एवं राष्ट्रनिष्ठ समाज का निर्माण संभव है। सँस्कारवान बालक एवं बालिकाएँ ही भारत के सुरक्षित एवं उज्ज्वल भविष्य के आधार स्तंभ हैं।

प्रयागराज से पधारी केंद्रीय टीम की सदस्य डॉ. अंबालिका मिश्रा ने सँस्कारशालाओं से जुड़ी बहनों को प्रशिक्षण देकर उन्हें अपने दायित्वों के प्रति जागृत किया तथा व्यवहारिक उदाहरणों के माध्यम से सँस्कार शिक्षा की उपयोगिता को रेखांकित किया। प्रांत सेवा प्रमुख अनिल भारतीय ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद के सेवा, सँस्कार और सँस्कृति के मूल भाव को आत्मसात करते हुए वात्सल्य वाटिका द्वारा आगामी समय में 25 ग्रामों में प्रशिक्षित आचार्याओं के माध्यम से सँस्कार शिक्षा, हिंदुत्व जागरण एवं महिला सशक्तिकरण का कार्य किया जाएगा। यह प्रयास समाज में व्यक्तित्व निर्माण, पारिवारिक समरसता एवं राष्ट्रबोध को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

विहिप-उत्तर गुजरात में प्रांत सेवा कुम्भ-2026 का आयोजन, समाज के अंतिम पंक्ति तक सेवा का संकल्प लिया गया

पटना बिहार में विराट हिन्दू सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित
विहिप प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति के सदस्य श्री जीवेश्वर जी मिश्र

उत्तर बंग प्रांत में 25 दिसम्बर को तुलसी पूजन कार्यक्रम का आयोजन

बहादराबाद स्थित अशोक सिंहल सेवाधाम के अंतर्गत स्वामी ओमप्रकाशानंद तीर्थ गंगाश्री जनसेवा न्यास द्वारा संचालित वात्सल्य वाटिका में मकर संक्रांति एवं सामाजिक समरसता कार्यक्रम का प्रेरणादायी आयोजन

अशोकनगर में विराट हिन्दू सम्मेलन से पूर्व भव्य कलश यात्रा का आयोजन हुआ

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि :28.01.2026
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

राजस्थान सरकार

2 साल
नव उत्थान - नई पहचान
बढ़ता राजस्थान - हमारा राजस्थान

- किसानों को 44,355 करोड़ रुपए का ब्याज मुक्त फसली ऋण वितरित
- 1.95 लाख नए कृषि विद्युत कनेक्शन, प्रतिदिन 268 नए कनेक्शन हो रहे जारी
- समर्थन मूल्य पर दलहन एवं तिलहन की 12.60 लाख मीट्रिक टन खरीद कर 4.94 लाख किसानों को 8,191 करोड़ रुपए का भुगतान
- 9,205 पीएम किसान समृद्धि केन्द्र स्थापित
- समर्थन मूल्य पर 33.42 लाख मीट्रिक टन गेहूं की खरीद कर 2.14 लाख किसानों को 471 करोड़ रुपए का भुगतान

- 1962 मोबाइल वेटेरिनरी सेवा वाहनों द्वारा 58.64 लाख पशुओं का निःशुल्क उपचार

- 66.22 लाख कृषकों को बीज मिनिकिट का वितरण

- राज्य में 1.98 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में ड्रिप, मिनी स्प्रिंकलर एवं 2.12 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में स्प्रिंकलर सैट स्थापित
- 32,918 किलोमीटर सिंचाई पाईप लाइन स्थापित

- द्वितीय विश्व युद्ध पेंशन 10,000 से बढ़ाकर 15,000 रुपए प्रतिमाह
- संविदा पर नियोजित भूतपूर्व सैनिकों के मानदेय में 21 प्रतिशत की वृद्धि

- 12.98 लाख महिलाएं लखपति दीदी

- 65 एन्टी रोमियो स्क्वॉड का गठन
- तीन महिला बटालियनों के लिए 2,216 पद
- 9.92 लाख गर्भवती महिलाओं को 531 करोड़ रुपए की सहायता

- 39,891 किमी. सड़कों के विकास कार्यों पर 27,860 करोड़ रुपए व्यय
- 1,698 बसावटों को पहली बार सड़कों से जोड़ा

- 1,656 नई ग्राम सेवा सहकारी समितियों का गठन

- नवनेरा बैराज व ईसरदा बांध का कार्य पूर्ण

- उदयपुर में अत्याधुनिक कौशल विकास केन्द्र
- जनजाति समुदाय हेतु 201 नवीन माँ बाड़ी केन्द्रों का संचालन

- सभी जिला चिकित्सालयों में वृद्धावस्था विशेषज्ञ इकाइयां रामाश्रय स्थापित

- 629 पीएमश्री बाल वाटिकाएं संचालित
- 8,020 स्मार्ट क्लासरूम, 500 पीएमश्री विद्यालयों में डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित
- 142 पीएमश्री विद्यालयों में ओ-लैब, 501 महात्मा गाँधी विद्यालयों में रोबोटिक्स लैब स्थापित
- विभिन्न योजनाओं में 4.14 लाख से अधिक बालिकाओं को 181 करोड़ रुपए हस्तान्तरित

- 65 i-Start लॉन्चपैड नेस्ट स्थापित

- एसआईटी गठन से डमी अभ्यर्थी, फर्जी डिग्री व भर्ती परीक्षा सम्बन्धी अन्य अनियमितताओं पर रोक
- 3.37 लाख युवाओं को कौशल प्रशिक्षण
- मुख्यमंत्री युवा संबल योजना में 4.13 लाख लाभार्थियों को 1,155 करोड़ रुपए का वितरण
- 1.91 लाभार्थियों को इंटर्नशिप

- प्रत्येक जिले में मातृ वन की स्थापना

- 42,438 मेगावाट की ऊर्जा परियोजनाओं को विकसित करने के एमओयू
- प्रधानमंत्री कुसुम योजना - 2,272 मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता की 1,019 परियोजना स्थापित
- किसानों को बिजली बिलों पर 44,558 करोड़ रुपए की सहायता

- 13.59 लाख ग्रामीण परिवारों को नल से जल उपलब्ध
- 14,025 जल संरचना के निर्माण से भूजल स्तर में वृद्धि
- 2,189 करोड़ रुपए के 1.05 लाख जल संरक्षण के कार्य पूर्ण

Samwad/D/723/2025-2026

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी